News Dhamaka
Digital Edition

न्यूज धमाका

पाइए खबरों की अपडेट सबसे पहले

वर्ष 02 अंक 252 पृष्ठ 8 जमशेदपुर, गुरूवार 14 अगस्त 2025

Email.newsdhamaka4@gmail.com / epaper for news portel -newsdhamaka.com

भारत-चीन के बीच सीधी उड़ान, प्रधानमंत्री मोदी का दौरा, करीब आ रहे हैं दोनों देश?

नईदिल्ली।

साल 2020 में गलवान में हुई हिंसक झड़प के बाद भारत और चीन के संबंध बेहद खराब हो गए थे। हालांकि, अब दोनों देश धीरे-धीरे रिश्तों को सुधारने के प्रयास कर रहे हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के सत्ता में आने के बाद से ये प्रयास और तेज हो गए हैं। सितंबर से दोनों देशों के बीच सीधी उड़ान शुरू हो जाएगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस महीने के अंत में शंघाई सहयोग संगठन की बैठक में शामिल होने के लिए चीन जा रहे हैं। गलवान हिंसा के बाद उनका ये पहला चीन दौरा होगा। वहां वे चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग से भी मुलाकात कर सकते हैं। इस सम्मेलन में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन भी शामिल होंगे। ऐसे में भारत-चीन के साथ-साथ भारत-रूस संबंधों के लिहाज से भी ये दौरा बेहद अहम होने वाला है।

खबर है कि सितंबर से भारत-चीन के बीच सीधी उड़ानें शुरू हो सकती हैं। प्रधानमंत्री मोदी के दौरे के दौरान इसकी औपचारिक घोषणा की जा सकती है।

रिपोर्ट के अनुसार, भारत सरकार ने एयर इंडिया और इंडिगो जैसी एयरलाइन कंपनियों को चीन के लिए तत्काल उड़ानें संचालित करने के लिए तैयार रहने को कहा है। कोरोनावायरस महामारी के बाद से ही दोनों देशों के बीच यात्री उड़ानें बंद हैं।

नवंबर, 2024 में रूस में प्रधानमंत्री मोदी और जिनपिंग की मुलाकात हुई थी। इसमें सीमा से सैनिकों की वापस पर सहमति बनी थी। ये प्रक्रिया शुरू भी हो चुकी है। पिछले साल अक्टूबर में दोनों देशों ने वास्तविक नियंत्रण रेखा पर गश्त को लेकर एक समझौता भी किया था। इसके बाद भारतीय सेना ने सीमा पर प्रमुख बिंदुओं पर दोबारा गश्त करना शुरू कर दिया है। भारतीय चरवाहों की भी आवाजाही सुनिश्चित हुई है।

रूस से तेल खरीदने पर ट्रंप ने भारत पर 25 प्रतिशत अतिरिक्त टैरिफ लगाने का ऐलान किया है। इस घोषणा के बाद चीन ने भारत के समर्थन में बयान दिया। चीन ने एक बेहद अहम बयान में कहा, भारत की संप्रभुता पर कोई समझौता नहीं हो सकता और उसकी विदेश नीति के फैसलों में दूसरे देश हेरफेर नहीं कर सकते, चाहे उनके भारत के साथ कितने भी महत्वपूर्ण संबंध क्यों न हों।

भारत ने 5 साल बाद जुलाई से चीनी नागरिकों को पर्यटक वीजा जारी करना शुरू किया है। इसके अलावा इस साल कैलाश मानसरोवर यात्रा भी शुरू हुई थी। हाल ही में भारतीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भारत-चीन व्यापारिक संबंधों के पट-री पर आने के संकेत दिए थे। उन्होंने कहा था, संबंध कितना आगे बढ़ेंगे, यह देखने के लिए हमें इंतजार करना होगा। इसी साल रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और विदेश मंत्री एस जयशंकर ने चीन का दौरा किया था।

भारत-चीन के बीच सीमा पर कई मुद्दे अनसुलझे हैं। इसके अलावा पाकिस्तान के साथ चीन की नजदीकी भी भारत के चिंता का विषय है। चीन और पाकिस्तान एक-दूसरे को सदाबहार रणनीतिक सहयोगी बताते हैं। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान दोनों की नजदीकी ने भारत को और चिंतित कर दिया है। चीन ब्रह्मपुत्र नदी पर विशाल बांध भी बना रहा है, जिस पर भारत ने चिंता जताई है। चीन तिब्बत से सटे इलाके में एक रेल लाइन भी बना रहा है।

दौसा में पिकअप और कंटेनर में भीषण भिड़ंत, यूपी निवासी 11 लोगों की मौत

खाटूश्याम-बालाजी के दर्शन कर लौट रहे थे

दौसा।

राजस्थान के दौसा जिले में बुधवार अलसुबह को हुए एक भीषण सड×क हादसे ने पूरे क्षेत्र को दहला दिया. दौसा-मनोहपुर रोड पर बापी के पास एक कंटेनर और यात्री पिकअप की जोरदार भिड़ंत में 10 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई. वहीं, एक महिला ने एसएमएस में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया. मृतकों की संख्या बढ×कर 11 हो गई है. एसएमएस अस्पताल में 8 घायल मरीजों का इलाज चल रहा है, जिनमें से 3 की हालत गंभीर बताई जा रही है. सूचना मिलने पर एसएमएस मेडिकल कॉलेज प्राचार्य डॉ. दीपक माहेश्वरी, अतिरिक्त अधीक्षक डॉ. गिरधर गोयल एसएमएस अस्पताल पहुंच रहे हैं. हादसे में 20 से अधिक लोग घायल हो गए हैं. मृतकों में 4 महिलाएं और 7 बच्चे शामिल हैं.

दौसा जिला कलेक्टर देवेंद्र कुमार ने घटना की पुष्टि करते हुए कहा कि प्रारंभिक रिपोर्ट के अनुसार, बापी के पास हुए एक हादसे में 11 लोगों की मौत हो गई है. 9 लोगों को इलाज के लिए रेफर किया गया है और 3 का इलाज जिला अस्पताल में चल रहा है. यह दुर्घटना एक यात्री पिकअप और कंटेनर के बीच हुई है.

डीएसपी रविप्रकाश शर्मा ने बताया कि सभी लोगों ने पहले खाटूश्याम दर्शन किए. इसके बाद सालासर बालाजी के दर्शन कर घर जा रहे थे. इस दौरान बापी से पहले रोड किनारे खड़े कंटेनर में गाड़ी जा घुसी, जिसमें 7 बच्चे और 4 महिलाओं की मौत हुई है. डीएसपी ने बताया कि हादसे में सभी मृतक उत्तर प्रदेश के एटा जिले के असरौला के निवासी हैं.

हादसे में मरने वालों में पूर्वी (3) पुत्री संजीव, प्रियंका (25) पत्नी संजीव, दक्ष (5) पुत्र जयप्रकाश राजपूत, शीला पत्नी जयप्रकाश, अंशु (26) पुत्र संतोष के नाम सामने आए हैं. अन्य मृतकों की शिनाख्त की जा रही है. वहीं, सीमा (23) पत्नी मनोज, मनोज (25) पुत्र लाखन, नैतिक (8) पुत्र सौरभ, प्रियंका पत्नी लाखन, रीता (26) पत्नी सौरभ, लक्ष्य (7) पुत्र सौरभ, नीरज (20) पत्नी जशवंत राजपूत, सौरभ (26) पुत्र खूबकरण राजपूत, सौरभ (32) पुत्र ज्ञान सिंह राजपूत गंभीर घायल हुए हैं. इन्हें प्राथमिक उपचार के बाद जयपुर रेफर कर दिया है. साथ ही चार मामूली घायलों का दौसा जिला अस्पताल में इलाज जारी है.

हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस और जिला प्रशासन की टीमें मौके पर पहुंचीं और घायलों को नजदीकी अस्पतालों में पहुंचाया गया. गंभीर रूप से घायलों को जयपुर और अन्य बड़े चिकित्सा केंद्रों में रेफर किया गया है. प्रशासन ने मृतकों के परिजनों से संपर्क कर उन्हें सहायता राशि और जरूरी मदद का आश्वासन दिया है. प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, टक्कर इतनी जोरदार थी कि पिकअप के आगे का हिस्सा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया. कई यात्री वाहन में फंस गए, जिन्हें कड़ी मशक्कत के बाद निकाला गया. हादसे के बाद सड×क पर लंबा जाम लग गया, जिसे पुलिस ने कड़ी मशक्कत के बाद खोला.

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने एक्स पर पोस्ट कर लिखा कि दौसा, राजस्थान में हुई सड×क दुर्घटना में महिलाओं और बच्चों समेत अनेक लोगों की मृत्यु का समाचार बहुत ही दुखद है. मैं शोक संतप्त परिवारजनों के प्रति गहन संवेदना व्यक्त करती हूं. मैं इस दुर्घटना में घायल हुए लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करती हूं.

सीएम भजनलाल ने एक्स पर पोस्ट कर हादसे को लेकर दुख जताया. उन्होंने लिखा कि दौसा में भीषण सड×क हादसे में जनहानि का समाचार अत्यंत दुःखद है. जिला प्रशासन को घायलों का त्वरित एवं समुचित उपचार सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया गया है. वहीं, डिप्टी सीएम प्रेम चंद बैरवा ने भी लिखा कि दौसा में हुए भीषण सड×क हादसे में जनहानि होने का अत्यंत दुःखद समाचार प्राप्त हुआ है. घायलों के शीघ्र व समुचित उपचार के लिए दौसा जिला प्रशासन को निर्देशित किया गया है. संवेदनाएं शोक संतप्त परिजनों के साथ हैं.

टैरिफ के घमासान के बीच पीएम मोदी की ट्रंप से हो सकती है मुलाकात!

अगले महीने यूएनजीए बैठक में होंगे शामिल

नई दिल्ली।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा यहां जारी वक्त-ाओं की सूची के अनुसार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सितंबर में संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) के वार्षिक उच्च स्तरीय सत्र को संबोधित कर सकते हैं. इस दौरान अमेरिका पीएम मोदी का अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से मुलाकात हो सकती है. ये सत्र 9 सितंबर को आरंभ होगा और ये 80वां सत्र है. ये बैठक 23 से 29 सितंबर के बीच होगी.

इसमें ब्राजील पारंपरिक रूप से सत्र का पहला वक्ता होगा. उसके बाद अमेरिका होगा. अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप 23 सितंबर को प्रतिष्ठित यूएनजीए मंच से विश्व नेताओं को संबोधित करेंगे. व्हाइट हाउस में अपने दूसरे कार्यकाल में यह उनका संयुक्त राष्ट्र सत्र को पहला संबोधन होगा. महासभा के 80वें सत्र की उच्च स्तरीय बहस के लिए वक्त-ाओं की सूची के अनुसार भारत के शासनाध्यक्ष 26 सितंबर की सुबह सत्र को संबोधित करेंगे. इसी दिन इजराइल, चीन, पाकिस्तान और बांग्लादेश के शासनाध्यक्ष भी संयुक्त राष्ट्र महासभा की आम बहस को संबोधित करेंगे.

पीएम मोदी इस साल फरवरी में वाशिंगटन डीसी स्थित व्हाइट हाउस में ट्रंप के साथ द्विपक्षीय बैठक के लिए अमेरिका गए थे. बैठक के बाद जारी एक संयुक्त बयान में पीएम मोदी और राष्ट्रपति ट्रंप ने 2025 की शरद ऋतु तक पारस्परिक रूप से लाभकारी, बहु-क्षेत्रीय द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) के पहले चरण पर बातचीत करने की योजना की घोषणा की थी.

व्यापार वार्ता चल ही रही थी कि ट्रम्प ने भारत पर कुल 50 प्रतिशत टैरिफ लगा दिया, जिसमें भारत द्वारा रूसी तेल की खरीद पर 25 प्रतिशत टैरिफ भी शामिल है जो 27 अगस्त से लागू होगा. टैरिफ पर प्रतिक्रिया देते हुए भारत के विदेश मंत्रालय ने कहा है कि देश को निशाना बनाना अनुचित और अविवेकपूर्ण है. इसमें कहा गया है कि भारत अपने हितों और आर्थिक सुरक्षा की रक्षा के लिए सभी आवश्यक उपाय करेगा.

पिछले सप्ताह ट्रंप द्वारा 25 प्रतिशत अतिरिक्त टैरिफ लगाने संबंधी कार्यकारी आदेश की घोषणा ऐसे समय में की गई, जब प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते के लिए छठे दौर की वार्ता के लिए अमेरिका का एक दल 25 अगस्त से भारत के दौरे पर आएगा.

दोनों देश इस वर्ष शरद ऋतु (अक्टूबर-नवंबर) तक समझौते के पहले चरण को पूरा करने का लक्ष्य बना रहे हैं. संयुक्त राष्ट्र महासभा की आम बहस के लिए वक्ताओं की सूची अभी अस्थायी है और अगले कुछ हफ़्तों में कार्यक्रम और वक्ताओं में बदलाव की संभावना है.

इस वर्ष यह सत्र इजराइल-हमास युद्ध और यूक्रेन संघर्ष के बीच आयोजित हो रहा है. ट्रंप ने कहा है कि अपने दूसरे राष्ट्रपति कार्यकाल के छह महीनों में उन्होंने कई युद्धों को सुलझाया है. इनमें आर्मेनिया और अजरबैजान, कंबोडिया और थाईलैंड, इजराइल और ईरान, रवांडा और कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, मिस्र और इथियोपिया और सर्बिया और कोसोवो के बीच शांति समझौता शामिल है. ट्रंप ने बार-बार भारत और पाकिस्तान के बीच मई में हुए संघर्ष को रोकने का श्रेय लिया है.

जम्मू-कश्मीर के उरी में एलओसी के पास मुठभेड़ के दौरान एक जवान शहीद

श्रीनगर।

जम्मू-कश्मीर में बारामूला जिले में नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास हुई मुठभेड़ के दौरान सेना का एक जवान शहीद हो गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, मुठभेड़ उरी सेक्टर के चुरंडा इलाके में 12 अगस्त को तड×के साढ़े 3 बजे हुई। सेना की ओर से अभी यह पुष्टि नहीं हुई है कि यह पाकिस्तानी सेना की बा-र्डर एक्शन टीम (बैट) का हमला था या पाकिस्तानी घुसपैठ रोकने की कोशिश में मुठभेड़ हुई थी। गोलीबारी को लेकर कोई बयान नहीं आया है।

रिपोर्ट के मुताबिक, 12 अगस्त की रात को पाकिस्तान से कुछ घुसपैठियों ने भारत में घुसने की कोशिश की थी, जिसको नाकाम करने की कोशिश में एक जवान की जान गई है। आशंका जताई जा रही है कि इस घुसपैठ में बीएटी का सहयोग था, क्योंकि यह सामान्य घुसपैठ से अलग माना जा रहा है और गोलीबारी में भी पाकिस्तानी सेना का समर्थन बताया जा रहा है। फिलहाल, भारतीय सेना और सुरक्षा एजेंसियां मामले की जांच कर रही हैं।

एक नजर

टोयला डूंगरी गुरुद्वारा के चेयरमैन बलबीर सिंह बबलू की माता मनजीत कौर का दाह संस्कार स्वर्णरेखा घाट मांनगो में किया गया

जमशेदपुर। टोयला दुगरी गुरुद्वारा के चेयरमैन बलबीर सिंह बबलू की माता मनजीत कौर उम्र 87 वर्ष का निधन हो गया वे कुछ दिनों से बीमार चल रहे थे वे अपने पीछे पुत्र तेजेंद्र सिंह बलबीर सिंह बबलू एवं

पुत्री कमलजीत कौर का भरा पूरा परिवार छोड़कर गई है दोपहर 3 बजे उनका अंतिम दाह संस्कार स्वर्णरेखा घाट मांनगो में कर दिया गया इसके पहले टोयला डोगरी स्थित निवास स्थान से उनकी सव यात्रा टोयला दुगरी गुरुद्वारा साहब लाई गई जहां पर समाज के प्रतिनिधियों ने उनको शाल ओड़ाकर श्रद्धांजलि अर्पित की उनके शव यात्रा में सेंट्रल गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भगवान सिंह चेयरमैन सरदार शैलेंद्र सिंह संरक्षक गुरदेव सिंह राजा वरीय उपाध्यक्ष नरेंद्र पाल सिंह भाटिया चंचल सिंह महासचिव अमरजीत सिंह गुरचरण सिंह बिला ओला दुगरी के प्रधान सतबीर सिंह सत चेयरमैन सुखदेव सिंह मली महासचिव जसवंत सिंह हरदीप सिंह कोषाध्यक्ष गुरनाम सिंह बेदी अकाली दल के प्रधान सुखदेव सिंह खालसा रामकृष्ण सिंह रविंद्र सिंह सलाहकार सुरजीत सिंह खुशीपुर हरविंदर सिंह मंटू अजीत गंभीर रामगढ़िया सभा के उपाध्यक्ष सतविंदर सिंह बब्बू गोपाल सिंह नरेंद्र सिंह ओशान इंद्रपाल सिंह बलवंत सिंह शेरों कश्मीर सिंह परविंदर सिंह सोहल सुखविंदर सिंह राजू सुखदेव सिंह बिट्टू सरबजीत सिंह ग्रेवाल चिरे सिंह दीपक गिल जसवंत सिंह जसु नौजवान सभा के प्रधान अमरीक सिंह महासचिव सुखवंत सिंह सुक्कू विक्की सिंह सभी गुरुद्वारा कमेटियों के पदाधिकारीयो एवं सेंट्रल स्त्री सभा की प्रधान रविंदर कौर चेयरमैन कमलजीत कौर संरक्षक दलबीर कौर महासचिव सुखवंत कौर परमजीत कौर जसबीर कौर बलविंदर कौर सतनाम सतनाम कौर आदि शामिल थी

माता मनजीत कौर के पुत्र बलबीर सिंह बबलू ने बताया कि 18 अगस्त को दोपहर 12 बजे टोयला दुगरी गुरुद्वारा साहब में अंतिम अरदास का कार्यक्रम रखा गया है

हर घर तिरंगा अभियान में शामिल हुए पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष दिनेश कुमार, आवास पर फहराया तिरंगा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आहवान पर चल रहे 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष दिनेश कुमार ने आज अपने आवास पर तिरंगा ध्वज फहराकर आज़ादी के अमृत महोत्सव में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। इस अवसर पर

उन्होंने कहा, तिरंगा सिर्फ हमारे राष्ट्र का प्रतीक नहीं, बल्कि यह हमारे स्वाभिमान, एकता और बलिदान की पहचान है। इसे ऊंचा रखना हर भारतीय का कर्तव्य है।

उन्होंने शहरवासियों से अपील की कि वे 13 से 15 अगस्त तक अपने घर, प्रतिष्ठान और कार्यालय पर तिरंगा अवश्य फहराएं तथा तिरंगे के साथ अपनी सेल्फी harghartiranga.com पर अपलोड कर अभियान को सफल बनाएं।

दिनेश कुमार ने कहा कि तिरंगे का सम्मान और उसे हर घर तक पहुंचाना स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। उन्होंने सभी को स्वतंत्रता दिवस पर देशभक्ति और एकता के संकल्प के साथ इस महाअभियान में जुड़ने का आहवान किया। इस दौरान विशेष रूप से पूर्व मंडल अध्यक्ष गोलमुरी प्रोबिर चटर्जी राणा, महामंत्री अशोक सामंता, लक्ष्मण बेहरा, मोहम्मद नौशाद समेत अन्य मौजूद थे।

बर्मा माइंस में गणेश पूजा को लेकर भूमि पूजन आयोजित हुआ

जमशेदपुर बर्मामाइंस स्थित गांधी नगर बस्ती में आंध्र समिति के द्वारा भगवान गणेश पूजा का आयोजन किया जाएगा।

गणेश पूजा हेतु मंडप (पूजा पंडाल) का निर्माण का शुभारंभ भूमिपूजन कर किया गया।

इस अवसर पर झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता महाबीर मुर्मू मुख्य यजमान के रूप में शामिल हुए।

पुरोहित सुशांत पडी के द्वारा वैदिक मंत्रों चरण के साथ भूमिपूजन कार्यक्रम को संपन्न किये

पूजा पंडाल का गुरु टेंट हाउस के द्वारा काल्पनिक मंदिर का स्वरूप का निर्माण किया जाएगा जिसका लागत करीब 2 लाख रुपया आएगी और आकर्षक विद्युतसजा किया जाएगा।

पूजा समिति के अध्यक्ष धर्म नाग के द्वारा बताया गया पूजा आरंभ दिन से हर दिन भोग का वितरण और भजन संध्या व संस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

इस अवसर पर धर्म नाग प्रतीक सिंह दिनकर पवन नाग अशोक पांडे रंजन कुमार मोहनता कविता नाग कौशल निषाद नीतीश राय योगेश कुमार शिवा यादव धर्मवीर यादव रितिक मिश्रा अर्जुन पात्रों साहिल दास मोहन टांडी आदि उपस्थित थे।

देश में राष्ट्रीयता का भाव जगाना प्रमुख उद्देश्य : दिनेश कुमार

जमशेदपुर। भाजपा सोनारी मंडल अध्यक्ष प्रशांत कुमार पोद्दार जी के अध्यक्षता में सोनारी कागलनगर सेंट्रल दुर्गा पूजा मैदान से कागलनगर बाजार होते हुए ऐरोड्रम बाजार से गुदडी बाजार होते हुए नर्स क्वार्टर से राम मंदिर अटल चौक में सम्पन्न हुआ। आयोजित विशाल तिरंगा यात्रा में मुख्य रूप में शामिल जमशेदपुर महानगर के पूर्व अध्यक्ष दिनेश कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि पूरे देश में राष्ट्रीयता का भाव जगाने के उद्देश्य से हर घर तिरंगा और तिरंगा यात्रा निकाली जा रही है, देश के युवाओं जो जगाना प्रमुख उद्देश्य है, कार्यक्रम को अन्य नेताओं ने भी संबोधित किया, पूर्व जिलाध्यक्ष देवेन्द्र सिंह,भाजपा प्रदेश कार्यसमिती सदस्य डॉ जटाशंकर पांडेय, व्यापार प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक नीरज सिंह, मंडल प्रभारी गंगा प्रसाद साहू, सोनु ठाकुर, सुनिल सिंह,अखिल सिंह, उज्वल सिंह, सतेंन्द्र सिंह यादव, संजय रजक, विकास साहू,संजय मुंडा,शंकर सिंह,सरिता लाल,पूरण वर्मा,गंगा प्रसाद साहू ,प्रदीप सिंह, नेहा साहू, कविता मुंडा, सुजीत आदित्य, रासबिहारी, मनोज मिश्रा, सुशील हेस्सा,राहुल तिवारी, दीपक नाग, काजल मुखर्जी, नितेश सिंह, अमर दास, तापस नंदी, भोला साहू, भूषण पंडित, लालू यादव, लालू सिंह, कृष्णा सिंह, रवि शर्मा, दीपक घोष, भारी बारिश होने के बावजूद भी लोगों की उत्साह देशप्रेम के प्रति देखने को बन रही थी।

समेत सेंकड़ों भाजपा कार्यकर्ता मौजूद थे।

उपायुक्त एवं वरीय पुलिस अधीक्षत ने स्वतंत्रता दिवस परेड के अंतिम पूर्वाभ्यास का किया निरीक्षण

जिला स्तरीय समारोह की तैयारियों की समीक्षा कर दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

न्यूज धमाका।

जमशेदपुर : स्वतंत्रता दिवस समारोह के मद्देनजर गोपाल मैदान, बिष्टुपुर में अंतिम परेड पूर्वाभ्यास का निरीक्षण उपायुक्त श्री कर्ण सत्यार्थी एवं वरीय पुलिस अधीक्षक श्री पीयूष पांडेय द्वारा किया गया। पूर्वाभ्यास के दौरान ध्वजारोहण कार्यक्रम के उपरांत परेड में शामिल टुकड़ियों और अन्य तैयारियों की विस्तार से समीक्षा की गई । मौके पर रूरल

एसपी श्री ऋषभ गर्ग, उप विकास आयुक्त श्री नागेन्द्र पासवान, अपर उपायुक्त श्री भगीरथ प्रसाद सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे । अंतिम परेड पूर्वाभ्यास में जैप -6, जिला पुलिस बल (महिला/ पुरूष), होमगार्ड, एनसीसी (ब्वॉयज एवं गर्ल्स), स्काउट एवं गाइड्स (ब्वॉयज एवं गर्ल्स). होमगार्ड तथा सेंट मैरी स्कूल बैंड की टुकड़ियों ने भाग लिया। उपायुक्त ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस देशभक्ति, एकता और बलिदान की भावना का प्रतीक है, और इसे जिले में पूरे सम्मान एवं गरिमा के साथ मनाना हम सभी का दायित्व है। उन्होंने मुख्य समारोह के सफल आयोजन के लिए सभी तैयारियां पूर्णतः सुनिश्चित करने के निर्देश पदाधिकारियों को दिए । उन्होने कहा कि कार्यक्रम के दौरान सुरक्षा, यातायात प्रबंधन, भीड़ नियंत्रण, मंच संचालन और तकनीकी व्यवस्थाओं पर विशेष ध्यान दिया जाए, ताकि मुख्य दिवस पर सभी गतिविधियां समय पर और व्यवस्थित रूप से संपन्न हों।

उपायुक्त की अध्यक्षता में हुई यातायात एवं सड़क सुरक्षा संबंधित बैठक आयोजित

सड़क दुर्घटना में पिछले एक माह में 11 लोगों की हुई मृत्यु, हेलमेट नहीं पहनने के कारण गई 9 की जान, 16 गंभीर घायलों में हेलमेट पहनने के कारण 5 लोगों की जान बची

न्यूज धमाका।

जमशेदपुर : समाहरणालय सभागार, जमशेदपुर में उपायुक्त श्री कर्ण सत्यार्थी की अध्यक्षता में यातायात एवं सड़क सुरक्षा की बैठक आयोजित की गई । पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) श्री ऋषभ गर्ग, उप विकास आयुक्त श्री नागेन्द्र पासवान, एडीएम लॉ एंड ऑर्डर श्री भगीरथ प्रसाद, जिला परिवहन पदाधिकारी श्री धनंजय, एसडीएम घाटशिला श्री सुनील चंद्र, एसडीएम धालभूम श्री चंद्रजीत सिंह, एसडीपीओ घाटशिला श्री अजीत कुजूर, डीएसपी ट्रैफिक श्री नीरज, डीएसपी हेडक्वार्टर श्री भोला प्रसाद व अन्य डीएसपी, एमवीआई श्री सूरज हेंब्रम समेत अन्य संबंधित विभागीय पदाधिकारी, ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन के प्रतिनिधि बैठक में शामिल हुए ।

बैठक में मानगो में होने वाले ट्रैफिक जाम के समाधान पर विमर्श किया गया । उपायुक्त ने कहा कि एमजीएम अस्पताल के शिफ्ट होने के बाद जाम में एंबुलेंस या अन्य आकस्मिक सेवा प्रदाताओं के परिवहन में बाधा उत्पन्न होने की संभावना बनी रहती है। उन्होने सिटी एसपी,

डीटीओ और ट्रैफिक एसपी को विस्तृत कार्ययोजना बनाते हुए जाम फ्री करने के उपाय एवं ट्रैफिक प्लान समर्पित करने के निर्देश दिए । साथ ही ओवरलोडिंग के विरूद्ध सघन अभियान चलाने का निर्देश अनुमंडल पदाधिकारी, धालभूम एवं जिला परिवहन पदाधिकारी को दिया गया।

बैठक में सड़क दुर्घटनाओं पर प्रभावी नियंत्रण हेतु आवश्यक सुरक्षात्मक उपाय, सड़क सुरक्षा नियमों के सख्ती से अनुपालन के साथ-साथ हिट एंड रन मामलों में मुआवजा भुगतान एवं अन्य संबंधित विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। सड़क दुर्घटनाओं की समीक्षा में पाया गया कि जुलाई माह में 24 सड़क दुर्घटनाएं हुई जिनमें 11 लोगों की मृत्यु तथा 16 व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हुए। समीक्षा में पाया गया कि 9 व्यक्ति ऐसे थे जिनका हेलमेट नहीं पहनने के कारण जान चली गई । वहीं 16 गंभीर घायलों में 5 लोगों की जान इसलिए बच पाई क्योंकि उन्होने हेलमेट पहना था । उपायुक्त ने जिला में नो हेल्मेट-नो पेट्रोल के निर्देशों का सख्ती से अनुपालन सुनिश्चित कराने का निर्देश देते हुए ट्रैफिक पुलिस को भी सख्ती से जांच अभियान चलाने की बात कही ।

उपायुक्त द्वारा एनएच-33 में होटल सिटी इन एवं डिमना चौक के नजदीक के दो ब्लैक स्पॉट पर उठाए गए सुरक्षात्मक उपायों की समीक्षा कर पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया गया ताकि दोनों स्थल ब्लैक स्पॉट की सूची से बाहर आएं। घूमावदार या अंधा मोड़ के समीप स्लाइडिंग बैरियर लगाने, ब्लैक स्पॉट में पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था कराने की बात एनएचएआई प्रतिनिधि एवं आरसीडी के कार्यपालक अभियंता को कही गई। हिट एंड रन के लंबित 35 मामलों में इंश्योरेंस कंपनी के पास लंबित 9 मामलों को इस माह में सेटल कराने का निर्देश दिया गया। अन्य लंबित मामलों में भी यथाशीघ्र प्रभावित परिवारों को मुआवजा भुगतान हेतु निर्देशित किया गया ।

- **345 ड्राइविंग लाइसेंस सस्पेंड, ट्रैफिक पुलिस ने 18 लाख रू. से जुर्माना वसूला**

जुलाई माह में सड़क सुरक्षा नियमों की अवहेलना पर 345 वाहन चालकों का ड्राइविंग लाइसेंस सस्पेंड किया गया । वाहन जांच अभियान में बिना हेलमेट के दोपहिया वाहन चालक और बिना सीटबेल्ट के चारपहिया वाहन चालकों समेत यातायात नियमों के उल्लंघन के अन्य मामलों में 18 लाख 38 हजार रू. जुर्माने की वसूली की गई । 6848 नए ड्राइविंग लाइसेंस बनाये गए जिनमें 6112 पुरूष एवं 736 महिलाएं हैं ।

सहकारिता से समृद्धि की ओर – सहकार भारती का सदस्यता अभियान प्रारंभ

जमशेदपुर । सहकार भारती झारखंड प्रदेश के संगठन प्रमुख भारत भूषण ने पूर्वी सिंहभूम जिला प्रभारी एवं कोल्हान प्रमंडल सह प्रमुख, सह प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य बाबूलाल नाग तथा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य विजय कुमार से जमशेदपुर में सौहार्दपूर्ण भेंट की। इस दौरान एक विशेष बैठक भी आयोजित किया गया । बैठक में पूर्वासिंहभूम जिले में सहकार भारती की गतिविधियों एवं आगामी कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा हुई। बैठक में निर्णय लिया गया कि

16 अगस्त 2025 से प्रारंभ होने वाले राज्य स्तरीय सदस्यता अभियान के तहत जिले में लैंपस, क्रेडिट सोसायटी, एफपीओ जैसे संस्थानों से सक्रिय संपर्क स्थापित किया जाएगा। साथ ही, उन्हें सहकार भारती से संस्थागत सदस्य के रूप में जुड़ने का आग्रह किया जाएगा, ताकि सहकारी आंदोलन को जमीनी स्तर पर और मजबूती मिल सके।

सहारा और ''हमारा इंडिया'' को झटका – निवेशक को 4.66 लाख लौटाने का आदेश

जमशेदपुर । जिला उपभोक्ता आयोग , पश्चिम सिंहभूम ने सहारा इंडिया, चाईबासा शाखा और हमारा इंडिया क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेडको संयुक्त रूप से एक निवेशक को 4,66,000 रुपये अदा करने का आदेश दिया है।

शिकायतकर्ता नागेन्द्र कुमार, निवासी न्यू कॉलोनी, तुंगरी, ने 2,00,000 रुपये का निवेश ''F64 गोल्डन डबल'' योजना में किया था, जिसकी परिपक्वता तिथि 07 जनवरी 2022 थी और मच्योरिटी राशि 4,00,000 रुपये तय थी। साथ ही 3% ''ग्रैटिट्यूड कूपन'' की राशि 6,000 रुपये भी देनी थी। लेकिन समय पर भुगतान न होने पर उन्होंने मामला दायर किया।

आयोग ने माना कि सहकारी सोसाइटी द्वारा राशि न लौटानासेवा में कमी, अनुचित व्यापार व्यवहार और विश्वासघात है। आदेशानुसार प्रतिवादी को

4,00,000 रुपये मच्योरिटी राशि
6,000 रुपये ग्रैटिट्यूड कूपन
50,000 रुपये मानसिक/आर्थिक क्षति मुआवजा
10,000 रुपये वाद व्यय

कुल 4,66,000 रुपये, 45 दिनों में चुकाना होगा, अन्यथा 9% वार्षिक ब्याज लगेगा।

आयोग ने साफ़ कहा कि ''हमारा इंडिया'' सहकारी सोसाइटी, सहारा समूह का हिस्सा है, इसलिए दोनों प्रतिवादी संयुक्त रूप से जिम्मेदार हैं।

पुस्तकालय कर्मी मानव विकास के संरक्षक : फ़ादर एस जॉर्ज

● नेशनल लाइब्रेरी डे के अवसर पर एक्सएलआरआई में सम्मान समारोह आयोजित, डिजिटल नवाचार की दिखी झलक

न्यूज धमाका।

जमशेदपुर, 13 अगस्त- ''पुस्तकालय केवल पुस्तकों का भंडार नहीं, बल्कि यह मानव विकास के संरक्षक हैं,''. यह बातें एक्सएलआरआई-जेवियर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट के निदेशक डॉ. (फा.) सेबेस्टियन जॉर्ज एसजे ने मंगलवार को सर जहांगीर गांधी पुस्तकालय में आयोजित राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस 2025 समारोह में यह बात कही.

उन्होंने कहा कि पुस्तकालय पेशेवर ज्ञान को संरक्षित करने और पीढ़ियों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. यह स्थान वह केंद्र है, जहां से विचार जन्म लेते हैं और भविष्य आकार पाता है. समारोह में डीन प्रशासन एवं वित्त डॉ. (फा.) डोनाल्ड डी'सिल्वा एसजे, डीन एकेडमिक्स प्रो. संजय पात्रो और वित्त विभागाध्यक्ष डॉ. एच. के. प्रधान भी उपस्थित थे. पुस्तकालय प्रमुख डी. टी.

एडविन और उनकी टीम द्वारा संचालित इस कार्यक्रम में विभिन्न श्रेणियों के उत्कृष्ट पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं को सम्मानित किया गया, जिनमें सर्वाधिक पुस्तक उधार लेने वाले, सबसे अधिक बार पुस्तकालय आने वाले, ऑनलाइन कैटलॉग और चर्चा कक्ष के नियमित उपयोगकर्ता, 'लाइब्रेरी क्विज़ 2025' विजेता तथा जुलाई 2025 के शीर्ष 'कौरसेरा लर्नर्स' शामिल थे. पुस्तकालय स्टाफ को भी उनके समर्पण और योगदान के लिए विशेष सम्मान दिया गया.

- **एक्सएलआरआई में तीन नए डिजिटल पहल की हुई शुरुआत**

इस अवसर पर एक्सएलआरआई ने तीन नई डिजिटल पहलों की शुरुआत एक्सएलआरआई हुई. जिसमें लाइब्रेरी ऐप, एक्सएलआरआई रिमोटएक्सएस ऐप और नोवो एक्सएल-लिबबॉट 2.0 का शुभारंभ किया गया. इन सेवाओं के माध्यम से छात्रों, शोधार्थियों और शिक्षकों को आधुनिक तकनीक के सहारे वैश्विक स्तर पर ज्ञान-संसाधनों तक सरल और त्वरित पहुंच सुनिश्चित होगी.

मौके पर मौजूद डॉ. (फा.) डोनाल्ड डी'सिल्वा एसजे ने कहा कि पुस्तकालय टीम की पेशेवराना दृष्टि और निष्ठा, छात्रों, फैकल्टी और समुदाय की शिक्षा यात्रा में निरंतर सहयोग करती है. प्रो. संजय पात्रो ने डिजिटल संसाधनों की अहमियत और सूचना-अंतर को पाटने की आवश्यकता पर बल दिया, जबकि डॉ. एच. के. प्रधान ने पुस्तकालय की यात्रा, भौतिक संग्रह से आधुनिक शोध केंद्र बनने तक का उल्लेख करते हुए इसे शैक्षणिक जीवन का आधार बताया.

आनन्द बिहारी दुबे नेमरा पहुंच कर मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन एवं परिजनों से मिलकर गुरूजी के निधन पर संवेदना प्रकट किया

नेमरा। पूर्वी सिंहभूम जिला कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष आनन्द बिहारी दुबे रामगढ के नेमरा गाँव पहुंच कर मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन एवं परिवारजनों से मिल कर दिशोम गुरु पूर्व मुख्यमंत्री शिबु सोरेन के निधन हो जाने पर संवेदना प्रकट किया, साथ ही कहा कि इस दुख की घड़ी में ईश्वर शक्ति प्रदान करें। श्री दुबे ने कहा कि सम्पूर्ण झारखण्डवासी गुरु जी के त्याग तपस्या को सदैव याद रखेंगे। इस पर माननीय मुख्यमंत्री ने आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर सन्नी सिंह एवं निखिल कुमार भी साथ रहे।

उपायुक्त की अध्यक्षता में हुई स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा बैठक, कहा- सुदूर-दुर्गम क्षेत्रों तक हो स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच

एमओआईसी नियमित फील्ड विजिट करें और ग्रामीणों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं पर निगरानी रखें

न्यूज धमाका।

उपायुक्त श्री कर्ण सत्यार्थी की अध्यक्षता में समाहरणालय सभागार में स्वास्थ्य विभाग की समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गई। बैठक में संस्थागत प्रसव, टीकाकरण, कुपोषण, परिवार नियोजन, ममता वाहन की उपलब्धता समेत गैर-संचारी रोगों की रोकथाम सहित अन्य स्वास्थ्य सेवाओं में प्रगति व गुणवत्ता की समीक्षा की गई।

बैठक में जानकारी दी गई कि वर्ष 2025-26 में 8 गर्भवती माताओं की मृत्यु विभिन्न स्वास्थ्य कारणों से हुई है। उपायुक्त ने चिंता जाहिर करते हुए कहा कि एक भी मृत्यु होना प्रशासन की नाकामी है, सभी एमओआईसी जिम्मेदारी लें और कमियों को दुरूस्त करें। एमओआईसी निमयित फील्ड विजिट करें और ग्रामीणों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को देखें। सुदूर-दुर्गम क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं सुलभता से उपलब्ध हो इस दिशा में समेकित प्रयास करें। उन्होंने निर्देश दिया कि शत-प्रतिशत गर्भवती माताओं का सुरक्षित एवं संस्थागत प्रसव कराया जाए ताकि मातृ-शिशु मृत्यु दर को शून्य किया जा सके ।

वहीं, पूर्ण टीकाकरण में शहरी क्षेत्र को छोड़कर अन्य सभी प्रखंडों में

लक्ष्य के अनुरूप उपलब्धि नहीं पाई गई। उपायुक्त ने सख्त निर्देश दिया कि सभी एमओआईसी प्रत्येक नवजात को टीका लगाना सुनिशश्चित करें। कुपोषण उपचार केंद्रों की बेड ऑक्यूपेंसी शत-प्रतिशत रखे जाने के साथ-साथ कुपोषण ग्रस्त बच्चो को लगातार चिन्हित करते हुए उपचारित करने का निर्देश दिया गया । परिवार नियोजन कार्यक्रम को गति देने, गैर-संचारी रोगों (ठउऊर) की नियमित स्क्रीनिंग गतिविधियों को और व्यापक बनाने, तथा ममता वाहनों की उपलब्धता सभी प्रखंडों में सुनिश्चित करने पर जोर दिया ।

बैठक में डेंगू, मलेरिया एवं अन्य मौसमी संक्रामक बीमारियों की रोकथाम और उपचार पर भी विशेष चर्चा हुई। उपायुक्त ने प्रभावित क्षेत्रों में नियमित सर्वेक्षण व त्वरित चिकित्सीय हस्तक्षेप सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही, नेशनल वेक्टर बॉर्न डिजीज कंट्रोल प्रोग्राम, राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम, टीबी उन्मूलन अभियान और एनीमिया मुक्त भारत अभियान की प्रगति रिपोर्ट पर विस्तृत समीक्षा की गई। उपायुक्त ने कहा कि इन सभी राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों को प्राथमिकता के साथ क्रियान्वित किया जाए तथा जमीनी स्तर पर उनके लाभार्थियों तक समय पर सेवाएं पहुँचें, इसके लिए नियमित मॉनिटरिंग और अंतर-विभागीय समन्वय बनाकर कार्य करें।

बैठक में सिविल सर्जन डॉ साहिर पाल, एसीएमओ डॉ जोगेश्वर प्रसाद, डॉ रंजीत पांडा, डॉ ए मित्रा, डॉ मृत्युंजय धावड़िया, डॉ. ओ.पी केशरी सहित, सभी एमओआईसी व स्वास्थ्य विभाग के अन्य पदाधिकारी-कर्मी उपस्थित रहे।

एक नजर

चाईबासा में स्वतंत्रता दिवस की फुल ड्रेस रिहर्सल सम्पन्न

चाईबासा। 15 अगस्त के मुख्य समारोह से पूर्व बुधवार को पुलिस केंद्र चाईबासा में उपायुक्त चंदन कुमार व पुलिस अधीक्षक राकेश रंजन की उपस्थिति में फुल ड्रेस रिहर्सल हुई। परेड में उपश्रद्ध जिला सशस्त्र पुलिस, सहायक पुलिस, गृह रक्षक, NCC, स्काउट-गाइड सहित कुल 10 प्लाटून शामिल रहे। मुख्य समारोह में राज्य के मंत्री दीपक बिरुवा द्वारा 9:05 बजे ध्वजारोहण किया जाएगा। इसके बाद विभिन्न सरकारी कार्यालयों में निर्धारित समयानुसार ध्वजारोहण होगा। 14 अगस्त को सुबह 7:30 बजे हर घर तिरंगा अभियान अंतर्गत तिरंगा यात्रा निकाली जाएगी।
समारोह का सीधा प्रसारण PRD Chaibasa यूट्यूब चैनल पर किया जाएगा।

जमशेदपुर के मानव घोष को राष्ट्रीय स्तर पर मिला सम्मान

● स्वतंत्रता दिवस समारोह में झारखंड का करेंगे प्रतिनिधित्व

राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक मानव घोष को भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा नई दिल्ली में 15 अगस्त 2025 को आयोजित होने वाले स्वतंत्रता दिवस समारोह में विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। मानव घोष कोल्हान विश्वविद्यालय के अंतर्गत करीम सिटी कॉलेज के राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक रहे हैं उनका चयन पूरे झारखंड राज्य से एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में किया गया है। यह चयन करीम सिटी कॉलेज के राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक के रूप में वर्ष 2023-24 में उत्कृष्ट सामाजिक कार्य, विभिन्न राष्ट्रीय अभियानों जैसे स्वच्छता ही सेवा अभियान, मेरे भारत के साथ दिवाली, सड़क सुरक्षा अभियान में सक्रिय भागीदारी के आधार पर हुआ है। इस समारोह में देशभर से चयनित एनएसएस स्वयंसेवक शामिल होंगे, जो लाल किले से प्रधानमंत्री द्वारा दिए जाने वाले स्वतंत्रता दिवस संबोधन के साक्षी बनेंगे।
इस गौरवपूर्ण अवसर पर मानव घोष ने कहा, "यह मेरे लिए गर्व का क्षण है कि मैं झारखंड का प्रतिनिधित्व करूंगा। यह अवसर मुझे और अधिक समर्पण के साथ समाज सेवा के लिए प्रेरित करेगा। इस पर करीम सिटी कॉलेज के प्राचार्य डॉ मोहम्मद रियाज,कॉलेज के राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी डॉ आले अली एवं राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयक सैयद साजिद परवेज ने हार्दिक शुभकामनाएं दीं और उनके उज्वल भविष्य की कामना की।

जगन्नाथपुर में पूर्व सीएम मधु कोड़ा व पूर्व सांसद गीता कोड़ा के नेतृत्व में भव्य तिरंगा यात्रा निकाली गई

तिलक कुमार वर्मा /जगन्नाथपुर। स्वतंत्रता दिवस 2025 के उपलक्ष्य में जगन्नाथपुर विधानसभा अंतर्गत आज देशभक्ति के उत्साह और राष्ट्रीय एकता के संदेश के साथ भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा एवं झारखंड भाजपा प्रदेश प्रवक्ता सह पूर्व सांसद गीता कोड़ा ने किया। सुबह से ही स्थानीय लोग हाथों में तिरंगा लिए बड़ी संख्या में एकत्रित हुए। यात्रा का शुभारंभ जगन्नाथपुर के मुख्य चौक से हुआ, जो बाजार क्षेत्र, मुख्य मार्ग और विभिन्न मोहल्लों से होते हुए पुनः प्रारंभिक स्थल पर पहुंचकर समाप्त हुई। इस दौरान पूरे मार्ग में "भारत माता की जय" और "वंदे मातरम" के गगनभेदी नारे गूंजते रहे।
तिरंगा यात्रा में विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक संगठनों के प्रतिनिधि, स्कूली बच्चे, युवा एवं महिला समूहों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। जगह-जगह स्थानीय नागरिकों ने पुष्पवर्षा कर यात्रा का स्वागत किया। मौके पर मधु कोड़ा ने कहा कि तिरंगा हमारी एकता, अखंडता और त्याग का प्रतीक है, जिसे हर नागरिक को गर्व से फहराना चाहिए। वहीं, गीता कोड़ा ने देश की आज़ादी में योगदान देने वाले वीर शहीदों को नमन करते हुए युवा पीढ़ी से राष्ट्रहित में सक्रिय योगदान की अपील की।

कोल्हान में पुलिस-नक्सली मुठभेड़, नक्सली एरिया कमांडर ढेर

तिलक कुमार वर्मा /चाईबासा। स्वतंत्रता दिवस के मद्देनजर कोल्हान एवं सारंडा क्षेत्र में सक्रिय प्रतिबंधित भाकपा (माओवादी) संगठन के शीर्ष नेताओं की गतिविधियों की सूचना पर चाईबासा पुलिस एवं कोबरा 209 बटालियन की संयुक्त टीम ने बुधवार सुबह गोईलकेरा थाना क्षेत्र के दुगुनिया, पोसैता और तुम्बागाड़ा के आसपास नक्सल विरोधी अभियान चलाया। पुलिस सूत्रों के अनुसार 12 अगस्त को गुप्त सूचना मिली थी कि संगठन के शीर्ष नक्सली मिसिर बेसरा, अनमोल, मोछु अनल, असीम मंडल, अजय महतो, सागेन अंगरिया, अश्विन समेत कई कमांडर स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर बड़ी घटना को अंजाम देने के लिए जुटे हैं। सूचना की पुष्टि के बाद 13 अगस्त सुबह लगभग 6 बजे सुरक्षाबलों ने अभियान शुरू किया, जिसके दौरान नक्सलियों ने पुलिस बल को देखते ही गोलाबारी शुरू कर दी। आत्मरक्षा में पुलिस ने जवाबी फायरिंग की। करीब आधे घंटे तक चली मुठभेड़ में नक्सली दल भारी पड़ता देख पहाड़ और घने जंगल का सहारा लेकर भाग निकला। सर्च अभियान के दौरान एक पुरुष नक्सली का शव, एक एसएलआर रायफल, कारतूस और अन्य दैनिक उपयोग की सामग्री बरामद हुई। मृतक की पहचान एरिया कमांडर अरुण उर्फ वरुण उर्फ निलेश मदकम (थाना कोन्टा, जिला सुकमा, छत्तीसगढ़) के रूप में हुई है, जो कई गंभीर मामलों में वांछित था। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, अरुण पर गोईलकेरा, सोनुवा और टोंटो थाना क्षेत्रों में हत्या, अपहरण, पुलिस पर हमला, विस्फोटक अधिनियम, आर्म्स एक्ट, यूएपीए और सीएलए एक्ट के तहत दर्ज कई मामले लंबित थे। अभियान में चाईबासा जिला पुलिस एवं कोबरा 209 बटालियन के जवान शामिल थे। पुलिस ने बताया कि नक्सल विरोधी अभियान जारी है और क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है।

सीआईआई का अल्कोर होटल में झारखंड मैन्युफैक्चरिंग कॉन्क्लेव 2025 का भव्य आयोजन, 150 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया

न्यूज धमाका।

जमशेदपुर। सीआईआई ने "भविष्य के लिए तैयार विनिर्माण, टिकाऊ, स्मार्ट और समावेशी औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण" विषय पर सीआईआई झारखंड मैन्युफैक्चरिंग कॉन्क्लेव के छठे संस्करण का आयोजन बिष्टुपुर स्थित अल्कोर होटल में किया गया। उद्योग जगत के प्रतिष्ठित नेता इस बात पर चर्चा करने के लिए एकत्रित हुए कि उद्योग 4.0 कैसे प्रतिस्पर्धी और लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं को संचालित करता है, कैसे टिकाऊ विनिर्माण लाभप्रदता और पर्यावरणीय संरक्षण दोनों को बढ़ावा देता है, और कैसे भविष्य के विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र के लिए एक समावेशी, भविष्य के लिए तैयार कार्यबल तैयार किया जा सकता है। सीआईआई झारखंड राज्य परिषद के उपाध्यक्ष और वैदेही मोटर्स के निदेशक, दिलू बिपिन पारिख ने भारत के विनिर्माण भविष्य में झारखंड की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालते हुए सत्र का उद्घाटन किया। उन्होंने भविष्य के लिए तैयार औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण हेतु त्रिआयामी परिवर्तन - डिजिटल, हरित और समावेशी - की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने बड़े उद्योगों और एमएसएमई के बीच सहयोग पर ज़ोर दिया और "मेड इन झारखंड" को गुणवत्ता, नवाचार और स्थिरता का प्रतीक बनाने के लिए साहसिक सोच और लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं का आ''न किया। उन्होंने यह कहते हुए समापन किया, "आइए 'मेड इन झारखंड' को नवाचार और उत्कृष्टता का वैश्विक प्रतीक बनाएं।" सीआईआई झारखंड विनिर्माण पैनल के संयोजक और टाटा कमिंस प्राइवेट लिमिटेड के प्लांट मैनेजर एवं निदेशक, अजितेश मोंगा ने मुख्य भाषण दिया और स्थिरता, उद्योग 4.0 प्रौद्योगिकियों और समावेशन द्वारा संचालित झारखंड के विनिर्माण परिवर्तन पर प्रकाश डाला। उन्होंने स्थायी प्रथाओं को प्रतिस्पर्धात्मक लाभों में बदलने और डिजिटल उपकरणों द्वारा सभी उद्यमों में उत्पादकता को कैसे बढ़ावा दिया जा सकता है, इस पर ज़ोर दिया। मोंगा ने लचीले पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के लिए बड़ी कंपनियों और एमएसएमई के बीच विविध, समावेशी कार्यस्थलों और सहयोगात्मक साझेदारियों के महत्व पर बल दिया। उन्होंने इस कॉन्क्लेव में "मेड इन झारखंड" को नवाचार, गुणवत्ता और उत्तरदायित्व का वैश्विक प्रतीक बनाने के अवसर का लाभ उठाने का आग्रह किया, जो भारत के विनिर्माण भविष्य का नेतृत्व करेगा।
सीआईआई झारखंड राज्य परिषद के अध्यक्ष और टाटा मोटर्स लिमिटेड के जमशेदपुर सीवी वर्क्स के प्लांट ऑपरेशंस प्रमुख सुनील तिवारी ने झारखंड की मज़बूत विनिर्माण स्थिति पर प्रकाश डाला, जो राज्य के सकल मूल्य वर्धन (जीवीए) में 9 लाख करोड़ रुपये से अधिक का योगदान देता है और भारत के इस्पात उत्पादन का 20-25% हिस्सा है। उन्होंने ऑटोमोटिव, नवीकरणीय ऊर्जा और उभरते क्षेत्रों में झारखंड के औद्योगिक विविधीकरण का उल्लेख किया, जिसे एशिया के विशाल आदित्यपुर औद्योगिक क्षेत्र का समर्थन प्राप्त है। परिचालन उत्कृष्टता, नवाचार और उद्योग 4.0 को अपनाने पर ज़ोर देते हुए, उन्होंने बड़ी कंपनियों और एमएसएमई के बीच सहयोग की प्रशंसा की जो प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देता है। रणनीतिक स्थान, कुशल कार्यबल और सहायक नीतियों के साथ, झारखंड डिजिटलीकरण, स्थिरता और समावेशन पर केंद्रित भविष्य के लिए तैयार विनिर्माण का नेतृत्व करने के लिए अच्छी स्थिति में है। उन्होंने इस कॉन्क्लेव में गठित साझेदारियों को ज़िम्मेदार और नवोन्मेषी विनिर्माण के एक मॉडल के रूप में झारखंड के विकास को गति देने के लिए प्रोत्साहित करते हुए समापन किया। रणजोत सिंह, तत्काल पूर्व अध्यक्ष, सीआईआई झारखंड राज्य परिषद एवं प्रबंध समिति। सीआईआई झारखंड राज्य परिषद के पूर्व अध्यक्ष और एमडेट जमशेदपुर प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक, रणजोत सिंह ने कहा कि विनिर्माण एक महत्वपूर्ण मोड़ पर है, जो पारंपरिक मानकों से हटकर एक नए सूत्र की ओर विकसित हो रहा है: स्मार्ट + टिकाऊ + समावेशी = भविष्य के लिए तैयार विनिर्माण। उन्होंने भारत के विनिर्माण क्षेत्र की मज़बूत वृद्धि पर प्रकाश डाला, जिसे पीएलआई और 'मेक इन इंडिया' जैसी पहलों का समर्थन प्राप्त है, साथ ही आपूर्ति श्रृंखला में कमियों और कौशल की कमी जैसी चुनौतियों को भी स्वीकार किया। उद्योग 4.0 प्रौद्योगिकियाँ उद्योग को बदल रही हैं और एमएसएमई के लिए तेज़ी से सुलभ हो रही हैं। स्थिरता और समावेशन प्रतिस्पर्धात्मकता और नवाचार के आवश्यक चालक बन गए हैं। श्री सिंह ने इस बात पर ज़ोर दिया कि भविष्य की सफलता सहयोग और दूरदर्शी नेतृत्व के माध्यम से प्रौद्योगिकी, पर्यावरणीय ज़िम्मेदारी और सामाजिक प्रभाव के एकीकरण पर निर्भर करती है।
कर्नल रोहित गुप्ता, कमांडेंट और प्रबंध निदेशक, 507 आर्मी बेस वर्कशॉप, भारतीय सेना ने तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देने और राष्ट्रीय सुरक्षा क्षमता को बढ़ाने के लिए उद्योग रक्षा साझेदारी को मज़बूत करने के महत्वपूर्ण महत्व पर ज़ोर दिया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे विनिर्माण क्षेत्र और रक्षा प्रतिष्ठानों के बीच सहयोगात्मक ढाँचा एक मज़बूत आपूर्ति श्रृंखला बना सकता है और नवाचार को बढ़ावा दे सकता है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि आत्मनिर्भर रक्षा विनिर्माण क्षमताओं के निर्माण और राष्ट्र की उभरती सुरक्षा चुनौतियों का सामना करने के लिए ऐसी साझेदारियाँ आवश्यक हैं। उन्होंने अत्याधुनिक रक्षा प्रौद्योगिकियों और विनिर्माण समाधानों के विकास में सार्वजनिक-निजी सहयोग के रणनीतिक मूल्य को रेखांकित किया। सीआईआई झारखंड मैन्युफैक्चरिंग पैनल के सह संयोजक और टाटा हिताची कंस्ट्रक्शन मशीनरी कंपनी लिमिटेड, खड़गपुर के प्लांट हेड, श्री शशांक शेखर ने छठे सीआईआई झारखंड मैन्युफैक्चरिंग कॉन्क्लेव के उद्घाटन सत्र के दौरान टिकाऊ, स्मार्ट और समावेशी विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया। झारखंड के विनिर्माण परिदृश्य को मज़बूत करने के लिए उद्योग, रक्षा और एमएसएमई के बीच सहयोग को महत्वपूर्ण बताते हुए, उन्होंने नवाचार, प्रौद्योगिकी अपनाने और कार्यबल समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए सामूहिक कार्रवाई का आ''न किया। सीआईआई झारखंड और उद्योग जगत के नेताओं द्वारा समर्थित इस कॉन्क्लेव का उद्देश्य सार्थक संवाद और साझेदारियों को बढ़ावा देना है जो राज्य के विनिर्माण क्षेत्र को वैश्विक प्रतिस्पर्धा और सतत विकास की ओर अग्रसर करेंगे। सत्र के दौरान अपने विचार साझा करने वाले प्रख्यात वक्ताओं में सीआईआई जमशेदपुर जोनल काउंसिल के अध्यक्ष और जेसीएपीसीपीएल के प्रबंध निदेशक अभिजीत नानोती शामिल थे। राजीव बंसल, संयोजक, सीआईआई झारखंड एमएसएमई पैनल और हेड सप्लाई चेन, टाटा मोटर्स लिमिटेड के शंकर नारायणन, कार्यकारी निदेशक संचालन, आरएसबी ट्रांसमिशन (1) लिमिटेड; कुश सक्सेना, आपूर्ति श्रृंखला निदेशक, टाटा कमिंस प्राइवेट लिमिटेड; गिरीश नायर, प्रमुख - आपूर्ति श्रृंखला, टाटा हिताची कंस्ट्रक्शन मशीनरी कंपनी लिमिटेड; बिस्वजीत जेना, सह संयोजक, सीआईआई झारखंड मैन्युफैक्चरिंग पैनल और एसोसिएट वाइस प्रेसिडेंट, आरएसबी ट्रांसमिशन (1) लिमिटेड; डॉ अमित रंजन चक्रवर्ती, संयोजक, सीआईआई झारखंड सस्टेनेबिलिटी पैनल और चीफ एनवायरनमेंट, टाटा स्टील लिमिटेड; डॉ जॉयदीप चटर्जी, निदेशक ईएसजी और कॉर्पोरेट गुणवत्ता, कमिंस इंडिया लिमिटेड; डॉ टाटा एल रघु राम, अध्यक्ष, फादर अरुप सेंटर फॉर इकोलॉजी एंड सस्टेनेबिलिटी और प्रोफेसर, एक्सएलआरआई; एमडी राशिद जाफरी, मुख्य मानव संसाधन बिज़नेस पार्टनर, इंजीनियरिंग एवं प्रोजेक्ट्स, टाटा स्टील लिमिटेड; प्रणव कुमार, मानव संसाधन प्रमुख, टाटा मोटर्स लिमिटेड; सुश्री नीलांजना मोहंती, उप महाप्रबंधक मानव संसाधन, टाटा मोटर्स लिमिटेड; सुश्री जया सिंह, प्रमुख मानव संसाधन, आरएसबी ट्रांसमिशन (1) लिमिटेड, जमशेदपुर। छठा सीआईआई झारखंड मैन्युफैक्चरिंग सम्मेलन "भविष्य के लिए तैयार विनिर्माणः सतत, स्मार्ट और समावेशी औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण" विषय पर केंद्रित था। प्रतिभागियों ने इस बात पर गहन चर्चा की कि कैसे उद्योग 4.0 आपूर्ति श्रृंखलाओं में क्रांति ला रहा है और उन्हें अधिक प्रतिस्पर्धी और लचीली प्रणालियों में बदल रहा है। सम्मेलन में सतत विनिर्माण को एक रणनीतिक दृष्टिकोण के रूप में भी रेखांकित किया गया जो न केवल पर्यावरणीय ज़िम्मेदारी को बढ़ाता है बल्कि व्यावसायिक लाभप्रदता को भी बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त, इस कार्यक्रम में एक समावेशी कार्यबल बनाने के महत्व पर भी चर्चा की गई, जिसमें विनिर्माण क्षेत्र की उभरती मांगों को पूरा करने के लिए एक विविध और कुशल प्रतिभा पूल बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया। इन केंद्रित विचार-विमर्शों के माध्यम से, सम्मेलन का उद्देश्य प्रतिभागियों को तेज़ी से बदलते औद्योगिक परिदृश्य को प्रभावी ढंग से समझने के लिए व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्रदान करना था। छठे सीआईआई झारखंड मैन्युफैक्चरिंग कॉन्क्लेव में 150 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

जश्न इवेंट द्वारा सरदार भगवान सिंह एवं सरदार शैलेंद्र सिंह को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया

न्यूज धमाका।

जमशेदपुर के विगत दिनों जश्न इवेंट द्वारा आयोजित तियान दा जश्न कार्यक्रम में सेंट्रल गुरुद्वारा प्रबंधक कमिटी के प्रधान सरदार भगवान सिंह एवं चेयरमैन सरदार शैलेन्द्र सिंह विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित थे,किंतु किसी कारणवश कार्यक्रम में शामिल नहीं हो पाए
इसी क्रम में आज इंदरजीत सिंह एवं जश्न इवेंट के आकाशदीप सिंह ने से सी जी पी सी कार्यालय पहुंच कर सरदार भगवान सिंह एवं सरदार शैलेन्द्र सिंह को

स्मृति चिन्ह और अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया
साथ ही इंदरजीत सिंह ने सरदार शैलेन्द्र सिंह को रामगढ़िया सभा का ट्रस्टी बनाए जाने पर बधाई दी एवं सी जी पी सी द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की एवं कहा कि आज जहां लोगों पर सबसे ज्यादा आर्थिक बोझ मेडिकल का पड़ रहा है,किंतु सी जी पी सी द्वारा गुरु रामदास जी निशुल्क ओ पी डी, जहां प्रतिष्ठित डॉक्टर ना केवल परामर्श दे रहे,जरूरत की दवा भी मरीजों को निःशुल्क मिल रही है,यह कार्य निश्चित रूप से,जन सेवा की अनुखि मिसाल है केंद्रीय कमेटी द्वारा आठवीं क्लास से लेकर 12वीं क्लास के बच्चों के लिए सिख विजियम कोचिंग सेंटर खोले जाने के लिए केंद्रीय कमेटी के प्रति आभार प्रकट किया,
प्रधान सरदार भगवान सिंह एवं सरदार शैलेन्द्र सिंह ने भी दोनों नौजवानों को उनके सामाजिक कार्यों के लिए सम्मानित किया एवं आश्वासन दिया कि , सामाजिक कार्यों में उनका पूरा सहयोग है, मुख्य रूप से सी जी पी सी के उपाध्यक्ष चंचल सिंह, महासचिव अमरजीत सिंह गुर्जर सिंह बिल्ला कोषाध्यक्ष गुरनाम सिंह सलाहकार सुखविंदर सिंह राजू, सुखदेव सिंह बिट्टू सरबजीत सिंह ग्रेवाल गुरशरण सिंह विकी उपस्थित रहे

नूईया गांव में 76वां वन पर्यावरण महोत्सव धूमधाम से मनाया गया, विधायक सोनाराम सिंकू हुए शामिल

जगन्नाथपुर। पर्यावरण संरक्षण और हरित अभियान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से उत्क्रमित मध्य विद्यालय नूईया के प्रांगण में 76वां वन पर्यावरण महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि जगन्नाथपुर विधायक एवं सत्तारूढ़ दल के उपमुख्य सचेतक सोनाराम सिंकू ने किया। इस अवसर पर जिला परिषद अध्यक्ष लक्ष्मी सुरेन, डीएफओ सारंडा, विद्यालय के प्रधानाध्यापक, शिक्षक-शिक्षिकाएं, छात्र-छात्राएं एवं ग्रामीण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। महोत्सव के उद्घाटन के पश्चात विधायक सोनाराम सिंकू ने विद्यालय परिसर में पौधारोपण कर हरित भविष्य की ओर कदम बढ़ाने का संदेश दिया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि पेड़-पौधे केवल पर्यावरण संतुलन के लिए ही नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य और जीवन के लिए भी अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने लोगों से अपील की कि प्रत्येक व्यक्ति वर्ष में कम से कम एक पेड़ अवश्य लगाए और उसकी देखभाल की जिम्मेदारी भी निभाए। जिला परिषद अध्यक्ष लक्ष्मी सुरेन ने कहा कि वन संरक्षण के बिना जल, भूमि और वायु प्रदूषण की समस्या को नियंत्रित नहीं किया जा सकता। उन्होंने बच्चों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनने और पौधों की रक्षा करने का संकल्प दिलाया।
डीएफओ सारंडा ने वन महोत्सव के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह न केवल वृक्षारोपण का पर्व है, बल्कि मानव और प्रकृति के रिश्ते को मजबूत करने का अवसर भी है। उन्होंने विद्यालय के छात्रों से पौधों की सुरक्षा हेतु 'एक छात्र-एक पौधा' अभियान में भाग लेने का आग्रह किया।
कार्यक्रम के दौरान विद्यालय परिसर एवं आसपास के क्षेत्रों में विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए गए। बच्चों ने पर्यावरण संरक्षण पर गीत, भाषण और नारे प्रस्तुत कर उपस्थित लोगों को जागरूक किया।

भगवान कृष्ण माखन चोर नहीं भक्तों के कष्ट की चोरी करते हैं इसलिए उन्हें हरि कहा जाता है

● भगवान कृष्ण सूक्ष्म रूप से सृष्टि के केंद्र बिंदु से पूरे सृष्टि को चला रहे हैं

न्यूज धमाका/जमशेदपुर। आनंद मार्ग प्रचारक संघ की ओर से घूम-घूम कर लगभग पांच स्थानों पर भगवान कृष्ण के वास्तविक रूप को बताया गया।
भगवान कृष्ण माखन चोर नहीं कृष्ण दुख की चोरी करते हैं अपने भक्तों के दुख को बिना बोले चुरा लेते हैं इसलिए उन्हें हरि कहा जाता है हरि का मतलब हुआ बिना बोले कुछ ले लेना इसलिए वह अपने भक्तों का दुख बिना बोले ही हर लेते हैं इसलिए उन्हें हरि कहा जाता है। सृष्टि के केंद्र बिंदु से सूक्ष्म रूप से सबको अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं इसलिए उन्हें कृष्ण कहा जाता है (कृष्ण का मतलब होता है जो अपनी ओर आकर्षित करें। मनुष्य के शरीर में (उच्चतम चक्र)सहस्त्रार चक्र पर विराजमान होकर मनुष्य के जीव भाव को अपनी ओर खींच रहे हैं वही है कृष्ण।
मन के संकुचित अवस्था में आत्मा का विस्तार संभव नहीं है। यदि इस संकुचित अवस्था को हटा दिया जाए, दूर कर

दिया जाए ,तो मन में स्वर्ग की स्थापना हो जाती है। इसलिए सुनील आनंद ने कहा कि विस्तारित हृदय ही वैकुंठ है जहां मन में कोई कुंठा नहीं है,कोई संकीर्णता नहीं है, उसे ही स्वर्ग कहते हैं । भक्त कहता है कि मैं हूं और मेरे परम पुरुष हैं दोनों के बीच में कोई और तीसरी सत्ता नहीं है ।मैं कि सी तीसरे सत्ता को मानता ही नहीं हूं इस भाव में मनुष्य प्रतिष्ठित होता है तो उसी को कहेंगे ईश्वर प्रेम में प्रतिष्ठा, भगवत्प्रेम में प्रतिष्ठा हो गई ।यही है भक्ति की चरम अवस्था। चरम अवस्था में भक्त के मन से जितने भी ईर्ष्या, द्वेष, घृणा , भय, लज्जा , शर्म ,मान मर्यादा, यश -अपयश इत्यादि के भाव समाप्त हो जाते हैं। उनका मन सरल रेखा कार हो जाता है और उनमें ईश्वर के प्रति भक्ति का जागरण हो जाता है। धूल देने के लिए तैयार हो गए । पापी बनने और नरक में जाने की बात जब नारद ने उन्हें कहा तो भक्त गोपीजन ने इसकी परवाह न करते हुए अपने पैरों की धूल ही दे दी ।तुम्हें जाने की बात जब नारद ने उन्हें कहा तो भक्त गोपीजन ने इसकी परवाह नहीं करते हुए अपने पैरों की धूल दे ही दी । उनका तर्क यह था कि यदि हमारे आराध्य इससे ठीक हो जाएंगे तो इससे बड़ी खुशी की बात हमारे लिए क्या हो सकती है।
उन्होंने कहा कि जहां भक्त हृदय में कोई संकीर्णता नहीं है, कुंठा से रहित है, वही वास्तव में बैकुंठ है। इसे ही आंतरिक बैकुंठ कहते हैं।

भागवत जीवन जीने की कला सीखने का उचित माध्यम- कथा वाचक

बिष्टुपुर सत्यनारायण मारवाड़ी मंदिर में श्रीमद् भागवत कथा का प्रथम दिन

न्यूज धमाका।

जमशेदपुर। बुधवार से बिष्टुपुर सत्यनारायण मारवाड़ी मंदिर में सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का शुभारंभ सुबह कलश स्थापना एवं शोभा यात्रा के साथ किया गया। विधि विधान से पूजन अर्चना कर कलश शोभा यात्रा कथा स्थल सत्यनारायण मारवाड़ी मंदिर से निकली, जो बिष्टुपुर मेन रोड स्थित राम मंदिर में पूजा अर्चना कर वापस कथा स्थल मंदिर परिसर पर पहुँची। भागवत की पूजा अर्चना और पूजन के बाद

कलश की स्थापना की गई। शाम में भागवत कथा का आयोजन किया गया। राया, मथुरा से आये कथा वाचक हिमांशु राघा चरण उपासक ने भागवत महात्म एवं मंगलाचरण से कथावाचन प्रारंभ किया। उन्होंने व्यासपीठ पर आसीन होकर कथा का व्याख्यान करते हुए कहा कि प्रत्येक मनुष्य को पुण्य प्राप्त करने के लिए भागवत कथा सुननी चाहिए। भागवत एक कथा नहीं, बल्कि यह जीवन जीने की कला सीखने का उचित माध्यम है। श्रीमदभागवत कथा के महत्व को समझाते हुए आगे कहा कि भागवत कथा में जीवन का सार तत्व मौजूद है आवश्यकता है निर्मल मन और स्थिर चित्त के साथ कथा श्रवण करने की। भागवत श्रवण से मनुष्य को परमानन्द की प्राप्ति होती है। भागवत श्रवण प्रेतयोनी से मुक्ति मिलती है। चित्त की स्थिरता के साथ ही श्रीमदभागवत कथा सुननी चाहिए। भागवत श्रवण मनुष्य के सम्पूर्ण क्लेश को दूर कर भक्ति की ओर अग्रसर करती है। उन्होंने कहा कि भागवत कथा जो कोई श्रमण करेगा वह ठाकुरजी को प्राप्त करने में सफल होगा तथा उसके जन्म-जन्मों के मोह-माया के बंधन दूर होंगे। राधे-राधे के उद्घोष से माहौल भक्ति के रस में डूब गया। प्रथम दिन बुधवार को यजमान के रूप में श्यामसुंदर नागेलिया, सुभाष मुनका, सत्यनारायण नरेड़ी, ओमप्रकाश मूनका, बिहारीलाल शर्मा उपस्थित थे। आज के प्रसाद के यजमान जमशेदपुर फर्नीचर, विजय मूनका, विश्वनाथ नरेड़ी, पैराडाईस, मयूर संघी, कोरोनेट आदि थे। इस मौके पर प्रमुख रूप से मंदिर कमिटी के सचिव सुरेश कुमार अगीवाल, संत कुमार अगीवाल, विजय कुमार अगीवाल, अशोक नरेड़ी, हरि शंकर सोंथालिया, बाबूलाल सोंथालिया, बजरंग लाल सोंथालिया, मुरारी लाल सोंथालिया, बनवारी लाल सोंथालिया, सत्यनारायण नरेड़ी, विवनाथ नरेड़ी समेत काफी संख्या में भक्तगण शामिल थे।

एक नजर

दुर्गा पूजा के लिए भूमिपूजन 16 अगस्त को

रांची। बरियातू हाउसिंग स्थित स्वर्ण जयंती क्लब दुर्गा पूजा समिति की ओर से 16 अगस्त को भूमिपूजन और खूंटी पूजन किया जाएगा। कार्यक्रम सुबह 10 बजे से आयोजित किया जाएगा। वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ पूजा की जाएगी। स्वर्ण जयंती क्लब दुर्गा पूजा समिति ने सदस्यों से पूजा में शामिल होने की अपील की है। यह जानकारी समिति की ओर से बुधवार को दी गई।

राज्यपाल को स्वतंत्रता दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में किया गया आमंत्रित

रांची। झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार से राजभवन में बुधवार को दक्षिणी छोटानागपुर के प्रमंडलीय आयुक्त अंजनी कुमार मिश्र और रांची के उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री ने मुलाकात की। । इस दौरान दौरान प्रमंडलीय आयुक्त ने राज्यपाल को मोरहाबादी मैदान में आयोजित होने वाले स्वतंत्रता दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पधारने के लिए आमंत्रित किया। उपायुक्त-सह-जिला दंडाधिकारी, मंजूनाथ भजंत्री की ओर से स्वतंत्रता दिवस समारोह की तैयारियों एवं कार्यक्रम की रूपरेखा से भी राज्यपाल को अवगत कराया गया।

झारखंड के धनबाद में सबसे अधिक 102 मिमी बारिश रिकॉर्ड

रांची। झारखंड के धनबाद जिले के पूर्वी टुंडी में पिछले 24 घंटे के दौरान सबसे अधिक बारिश 102.2 मिलिमीटर रिकॉर्ड की गई। इस दौरान रांची में 43.8 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई। नहीं इस दौरान राज्य में सबसे अधिक तापमान सरायकेला में 35.4 और सबसे कम तापमान गोड्डा में 21.4 डिग्री सेल्सियस रिपोर्ट किया गया। मौसम विभाग के अनुसार तो 16 अगस्त तक राज्य की विभिन्न जिलों में गर्जन के साथ आकाशीय बिजली गिरने और 30 से 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवा चलने की आशंका है। इसे लेकर मौसम विभाग ने येलो अलर्ट जारी किया है। बुधवार को रांची और आसपास के इलाकों में सुबह से बादल छाए रहे हालांकि इस दौरान बारिश दर्ज नहीं की गई लेकिन मौसम में ठंढक महसूस की गई। बुधवार को रांची में अधिकतम तापमान 30.4 डिग्री जमशेदपुर में 34.5 डिग्री, डाल्टनगंज में 33.2 बोकारो में 34.1 डिग्री और चाईबासा में अधिकतम तापमान 35.2 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया।

भैरव सिंह की जमानत याचिका खारिज

रांची। रांची सिविल कोर्ट ने हिंदूवादी नेता भैरव सिंह को जमानत देने से इनकार कर दिया है। बुधवार को रांची सिविल कोर्ट के प्रधान न्यायायुक्त अनिल कुमार मिश्रा की अदालत में हुई सुनवाई के बाद उसकी जमानत याचिका खारिज कर दी गयी। भैरव सिंह की ओर से अधिवक्ता कीर्ति सिंह ने सुनवाई के दौरान अदालत के समक्ष अपनी दलीलें रखीं और अदालत से जमानत देने का आग्रह किया। अधिवक्ता ने अपनी दलील में कहा कि उनके मुवक्किल (भैरव सिंह) को बेवजह आरोपित बनाया गया है। वहीं, सूचक की ओर से उपस्थित अधिवक्ता अमन कुमार राहुल ने यह दलील दी कि भैरव सिंह के विरुद्ध रांची के कई थानों में मुकदमा दर्ज है। भैरव सिंह को जिस मामले में गिरफ्तार किया गया है, उसमें उसकी भूमिका है, इसलिए उसे जमानत नहीं दी जानी चाहिए। दोनों पक्षों की दलील सुनने के बाद अलालत ने भैरव सिंह की जमानत याचिका खारिज कर दी। उल्लेखनीय है कि 19 जुलाई को भैरव सिंह को चुटिया थाना कांड संख्या 125/25 मामले में गिरफ्तार किया गया था। यह मामला नगर निगम के टेंडर विवाद से जुड़ा है। नगर निगम में पहले भैरव सिंह के टेंडर का काम चलता था। लेकिन फिर दूसरे लोगों के टेंडर का काम चलने लगा। भैरव सिंह पर आरोप है कि वहां काम करने वाले लोगों से उनकी तरफ से पैसे की मांग की गयी और पैसा नहीं देने पर उनके साथ भैरव सिंह से मारपीट की थी।

डीएवी हेहल में जेपीएससी में सफल छात्र अनुराग और मनाली सम्मानित

रांची। डीएवी पब्लिक स्कूल, हेहल में बुधवार को प्रातःकालीन प्रार्थना सभा के दौरान 11वीं जेपीएससी परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले दो पूर्व छात्रों अनुराग सिन्हा और मनाली उरांव का सम्मान किया गया। अनुराग सिन्हा ने 145वीं रैंक के साथ झारखंड वित्त सेवा में तथा मनाली उरांव ने 343वीं रैंक के साथ झारखंड प्रोबेशन सेवा में स्थान प्राप्त किया है। उनकी इस उपलब्धि पर प्राचार्य बिपिन राय ने स्मृति-चिन्ह और उपहार भेंट कर सम्मानित किया। मौके पर प्राचार्य ने कहा कि हमारे पूर्व छात्र-छात्राएं जब जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करते हैं, तो यह केवल उनका ही नहीं, बल्कि पूरे विद्यालय परिवार का सम्मान होता है। अनुराग और मनाली ने जिस लगन, अनुशासन और संकल्प के साथ यह उपलब्धि हासिल की है, वह वर्तमान विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत है। वहीं सम्मान प्राप्त करते हुए अनुराग सिन्हा ने कहा कि वे आज जो भी हैं उसमें डीएवी हेहल के संस्कार और शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने बताया कि मेहनत, धैर्य और समय का सही उपयोग ही सफलता की कुंजी है। आप सभी को चाहिए कि लक्ष्य निर्धारित कर पूरी निष्ठा से प्रयास करें। मनाली उरांव ने कहा कि सफलता का रास्ता हमेशा आसान नहीं होता, लेकिन कठिनाइयां हमें मजबूत बनाती हैं। मैं चाहती हूं कि आप सभी चुनौतियों से घबराएं नहीं, बल्कि उनका सामना पूरे आत्मविश्वास के साथ करें। कार्यक्रम में कक्षा 10 वीं से 12 वीं तक के विद्यार्थी और सभी शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित थे।

रांची में स्वतंत्रता दिवस समारोह से पहले हुआ फुल ड्रेस रिहर्सल

उपायुक्त और एसएसपी की देखरेख में फुल ड्रेस रिहर्सल

संवाददाता/राँची।

झारखंड की राजधानी रांची के मोरहाबादी मैदान में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित होने वाले मुख्य समारोह की तैयारियों के तहत बुधवार को फुल ड्रेस रिहर्सल संपन्न हुआ। उपायुक्त मंजूनाथ भजन्त्री और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक चंदन सिन्हा की अगुवाई में आयोजित रिहर्सल में स्वतंत्रता दिवस के दिन होने वाली सभी औपचारिक गतिविधियों का सटीक अनुकरण किया गया। राज्य के राज्यपाल संतोष गंगवार 15 अगस्त को मोरहाबादी मैदान में तिरंगा फहराएंगे।

उपायुक्त और एसएसपी ने परेड की सलामी ली। आला अधिकारियों द्वारा सभी पार्टियों को परेड से संबंधित आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये। समारोह की सुरक्षा एवं सुचारू संचालन सुनिश्चित करने के लिए प्रतिनियुक्त सभी दंडाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारियों की संयुक्त ब्रीफिंग भी की गई। इस अवसर पर पुलिस महानिरीक्षक मनोज कौशिक, उपायुक्त मंजूनाथ भजन्त्री एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक चंदन सिन्हा ने संयुक्तादेश के मुख्य बिंदुओं को विस्तार से समझाते हुए सभी पदाधिकारियों को समय पर अपने प्रतिनियुक्ति स्थल पर पहुंचकर सौंपे गए कार्य एवं दायित्व का निर्वहन करने का निर्देश दिया।

उपायुक्त ने कहा कि सभी अधिकारी अपने कार्य, दायित्व और प्रतिनियुक्ति स्थल की पूरी जानकारी रखें एवं मुख्य अतिथियों के आगमन और निर्गमन की व्यवस्था समयबद्ध तरीके से सुनिश्चित करें। एसएसपी ने सुरक्षा व्यवस्था पर विशेष बल देते हुए निर्देश दिया कि समारोह में आने वाले सभी आगंतुकों की सघन जांच करें और कोई भी अवांछित व्यक्ति किसी आपत्तिजनक सामग्री के साथ समारोह स्थल में प्रवेश न करें इसका विशेष ध्यान रखें।

लाला लाजपत राय स्कूल में हुई फेस पेंटिंग और बोर्ड डेकोरेशन प्रतियोगिता

संवाददाता/राँची।

लाला लाजपत राय बाल मंदिर सीनियर सेकेंडरी स्कूल पूंदाग में बुधवार को फेस पेंटिंग और बोर्ड डेकोरेशन प्रतियोगिता हुई। कार्यक्रम में विद्यालय के चारों हाउस (लाजपत हाउस, रमन हाउस, भाभा हाउस और टैगोर हाउस) के बच्चों ने अपनी कलाओं का प्रदर्शन किया। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर उनको थीम दिया गया था। इसमें फेस पेंटिंग प्रतियोगिता की थीम- स्वतंत्रता, बोर्ड डेकोरेशन प्रतियोगिता की थीम- लाजपत हाउसः 1857का सिपाही विद्रोह, रमण हाउस- भारत छोड़ो आंदोलन, भाभा हाउस- स्वतंत्रता दिवस और टैगोर हाउस का भारतीय संविधान था।

बोर्ड डेकोरेशन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान -रमन हाउस, द्वितीय स्थान- टैगोर हाउस और तृतीय स्थान -भाभा हाउस का रहा। फेस पेंटिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान -टैगोर हाउस, द्वितीय स्थान- भाभा हाउस और तृतीय स्थान -लाजपत हाउस रहे। निर्णायक दल में पल्लवी सिन्हा, अनुपमा कुमारी, सुषमा कुमारी थी। विद्यालय के प्राचार्य शैलेंद्र कुमार और उप प्राचार्य प्रफुल्ल कुमार ने बच्चों की प्रतिभा की सराहना की।

प्राचार्य शैलेंद्र कुमार ने कहा कि विद्यालय में फेस पेंटिंग और बोर्ड डेकोरेशन प्रतियोगिता एक मजेदार और रचनात्मक गतिविधि है जो छात्रों को अपनी कलात्मकता दिखाने का अवसर प्रदान करती है। यह छात्रों को सामाजिक और भावनात्मक रूप से विकसित होने में भी मदद कर सकती है।

प्रदीप वर्मा कंस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया की गवर्निंग बॉडी के सदस्य निर्वाचित

रांची। राज्यसभा सांसद डॉ प्रदीप कुमार वर्मा ने दिल्ली में आयोजित प्रतिष्ठित कंस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया के गवर्निंग बॉडी चुनाव में जीत दर्ज की है। यह पहली बार है जब झारखंड के किसी सांसद ने इस प्रतिष्ठित क्लब की गवर्निंग बॉडी में सदस्य का पद हासिल किया है। डॉ प्रदीप कुमार वर्मा की जीत में झारखंड के सभी वर्तमान और पूर्व सांसदों ने एकजुटता दिखाते हुए उनका समर्थन किया। इस अवसर पर झारखंड भाजपा प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य अजय राय ने उन्हें बधाई देते हुए कहा, डॉ प्रदीप कुमार वर्मा का इस महत्वपूर्ण पद पर चुना जाना झारखंड के लिए गर्व का विषय है। यह न केवल राज्य की प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाला क्षण है, बल्कि इससे झारखंड की आवाज़ को राष्ट्रीय स्तर पर और मजबूती मिलेगी। उल्लेखनीय है कि 1947 में स्थापित यह क्लब देश के सांसदों और पूर्व सांसदों के लिए एक महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक मंच है। इस चुनाव में कुल 1295 वोटरों ने हिस्सा लिया, जिसमें झारखंड से 23 वोटर शामिल थे और 21 ने मतदान किया।

नेता प्रतिपक्ष ने राज्य सरकार पर निशाना साधा

होनहार पुलिस पदाधिकारियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही राज्य सरकार

संवाददाता/राँची।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने राज्य सरकार पर निशाना साधा है। उन्होंने राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन पर निजी स्वार्थ पूर्ति, भ्रष्टाचार एवं गलत कार्यों के लिये गैर कानूनी काम करने का आरोप लगाया।

बाबूलाल मरांडी ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा है कि समाचारों से पता चला है कि झारखंड पुलिस सेवा के अधिकारियों की भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) में प्रोन्नति के लिये आयोजित संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की बैठक इसलिये रद्द हो गई, क्योंकि सेवानिवृत्ति (रिटायरमेंट) के बाद भी अवैध एवं गैरकानूनी रूप से पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) के पद पर काम कर रहे अनुराग गुप्ता को उस बैठक में शामिल रखने से यूपीएससी से मना कर दिया। इस वजह से राज्य के जिन योग्य पुलिस अधिकारियों को तत्काल आईपीएस बनने का अवसर मिलता, वो अनिश्चित काल के लिये टल गया है।

मरांडी ने कहा कि जबकि ऐसे प्रोन्नति पाने वाले अधिकारियों के लिये उनके कॅरियर में यह तरक़्क़ी एक-एक दिन के लिये महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन निजी स्वार्थ पूर्ति, भ्रष्टाचार एवं ग़लत कार्यों के लिये ग़लत एवं ग़ैर कानूनी काम करके तुरंत आईपीएस में प्रोन्नति पाने के योग्य झारखंड के होनहार पुलिस अधिकारियों के भविष्य से खिलवाड़ कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह स्थिति दुर्भाग्यपूर्ण है। सरकार इस विषय पर गंभीरता से विचार करे और क़ानून के मुताबिक काम करे।

टैली प्राइम के नवीनतम अपडेट्स पर कार्यशाला का आयोजन

संवाददाता/रांची।

दी इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया (आईसीएआई), रांची शाखा की ओर से बुधवार को टैली प्राइम पर नवीनतम अपडेटः सरलता की शक्ति विषय पर चार्टर्ड एकाउंटेंट्स के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में गौतम चक्रवर्ती, एजीएम-प्रोडक्ट् एक्सीरलेंस, टैली सोल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड उपस्थित रहे। उन्होंने प्रतिभागियों को टैली प्राइम के नवीनतम संस्करण में आए कई महत्वपूर्ण सुधारों और फीचर्स के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

मौके पर चक्रवर्ती ने बताया कि टैली प्राइम के नए अपडेट्स में इनवॉइस मैनेजमेंट सिस्टम (आइएमएस), जीएसटी पोर्टल से इनवॉइस का मिलान आसान बनाता है और आईटीसी की निगरानी को और सटीक करता है। एडिट लॉग सारांश जिससे सभी बदलावों का पूरा रिकॉर्ड मिलता है और ऑडिट के लिए यह बेहद उपयोगी है। एमएसएमई फ़ॉर्म-1 की संशोधित रिपोर्टिंग की जानकारी देता है, ताकि समय पर भुगतान और अनुपालन सुनिश्चित हो सके। इससे स्मार्ट बैंक रीकन्सिलिएशन, जिससे बैंक स्टेटमेंट्स का त्वरित और सटीक मिलान करने में भी मदद मिलती है। उन्होंने कहा कि जीएसटी सुधार से जीएसटीआर-1, जीएसटीआर -2बी और जीएसटीआर-3 बी की फाइलिंग प्रक्रिया और आसान हो गई है।

गौतम चक्रवर्ती ने कहा कि टैली प्राइम का यह नया संस्करण पावर ऑफ सिंपलीसिटी की अवधारणा पर आधारित है, जो अकाउंटिंग, कम्प्लायंस और डेटा प्रबंधन को सहज तेज़ और अधिक सुरक्षित बनाता है। रांची शाखा के अध्यक्ष सीए अभिषेक केडिया ने बताया कि इस प्रकार की कार्यशालाएं सदस्यों और विद्यार्थियों को नवीनतम तकनीकी बदलावों से अवगत कराती हैं, जिससे वे अपने पेशेवर कार्यों में उत्कृष्टता ला सकें। कार्यशाला का सञ्चालन सीए अनूप कुमार ने किया। कार्यशाला में रांची शाखा के सीए स्टूडेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष सीए दिलीप कुमार सहित अन्यम उपस्थित थे ।

रांची की लाखों महिलाओं के खातों में पहुंची मंईयां सम्मान योजना की राशि

संवाददाता/रांची।

झारखंड में रांची की माताओं और बहनों के लिए खुशखबरी है। राज्य सरकार की ओर से संचालित "मंईयां सम्मान योजना" के तहत जुलाई महीने की 2500 की सम्मान राशि सीधे उनके बैंक खातों में भेज दी गई है।जिला प्रशासन की ओर से बुधवार को इसकी जानकारी दी गयी। रांची जिला प्रशासन की ओर से बताया गया कि पहले चरण में 3 लाख 86 हजार 693 महिलाओं को कुल 96 करोड़ 67 लाख 32 हजार 500 रुपये की राशि डीबीटी के जरिए अंतरण कर दी गयी है। जिले के अनगड़ा में 16,490, अरगोड़ा (नगर निगम) में 11,923, बड़गाईं (नगर निगम) में 8,924, बेड़ो में 20,622, बुंडू में 8,489, बुंडू नगर पंचायत में 3,424, बुढ़मू में 17,657, चान्हो में 19,715, हेहल (नगर निगम) में 15,170, इटकी में 10,455, कांके में 31,540, कांके (नगर निगम) में 1,291, खलारी में 9,675, लापुंग में 11,216, मांडर में 23,279, नगड़ी में 17,677, नगड़ी (नगर निगम) में 7,439, नामकुम में 17,696, नामकुम (नगर निगम) में 8,368, ओरमांझी में 18,164, राहे में 9,527, रातू में 18,467, सिल्ली में 21,194, सोनाहातू में 12,820, तमाड़ में 18,500 और सदर (नगर निगम) में 26,971 महिलाओं को लाभ मिला है।

जिन महिलाओं का नाम पहले से सूची में है। लेकिन बैंक खाते से आधार लिंक नहीं है, उन्हें तुरंत आधार सीडिंग करानी होगी, वरना आगे पैसा नहीं मिलेगा। वहीं, जिनका भौतिक सत्यापन बाकी है, उनका काम भी तेजी से चल रहा है। जैसे ही सत्यापन पूरा होगा, बाकी योग्य महिलाओं को भी पैसा भेज दिया जाएगा। अगर आपका सत्यापन लंबित है, तो आप अपनी आंगनबाड़ी दीदी से मिलकर फॉर्म भर सकती हैं।

जन्माष्टमी पर्व पर श्री राधा कृष्ण प्रणामी मंदिर में भव्य आयोजन

संवाददाता/रांची।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पावन अवसर पर प्रणामी ट्रस्ट की ओर संचालित रांची के पुंदाग स्थित श्री राधा कृष्ण प्रणामी मंदिर में आगामी 16 अगस्त को धूमधाम से श्री कृष्ण जन्माष्टमी मनाया जाएगा। इस अवसर पर कई धार्मिक अनुष्ठान और सांस्कृतिक कार्यक्रमों आयोजन किए जाएंगे। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के जुटने की उम्मीद है। यह जानकारी ट्रस्ट के मीडिया प्रभारी संजय सराफ ने बुधवार को प्रेस विज्ञप्ति जारी कर दी।

सर्राफ ने बताया कि जन्माष्टमी को लेकर मंदिर को विशेष रूप से रंग-बिरंगी विद्युत रोशनियों, फूलों और पारंपरिक सजावट से सुसज्जित किया जा रहा है। जन्माष्टमी पूर्व संध्या से ही भजन-कीर्तन, संकीर्तन और प्रभु श्रीकृष्ण के बाल लीलाओं का गुणगान आरंभ हो जाएगा, जो रातभर चलेगा। ट्रस्ट के उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल ने बताया कि भक्त झूले में विराजमान बाल गोपाल को झुलाएंगे। इसे झूलन महोत्सव के रूप में मनाया जाएगा। रात्रि 12 बजे भगवान श्रीकृष्ण को छप्पन भोग अर्पित किया जाएगा। इसके बाद प्रसाद वितरण होगा। ट्रस्ट के भजन गाय और महिला समिति की ओर से सुंदर भजन प्रस्तुत किए जाएंगे। उन्होंने ट्रस्ट के सभी पदाधिकारी और सभी श्रद्धालुओं से समय पर पहुंचने और आयोजन को सफल बनाने की अपील की है।

डालसा ने किया सरकारी और निजि विद्यालयों का निरीक्षण

संवाददाता/राँची।

झालसा के निर्देश पर न्यायायुक्त-सह-अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकार के मार्गदर्शन में जिले में संचालित निजी और सरकारी स्कूलों के निरीक्षण के लिए सचिव रवि कुमार भास्कर की देखरेख में टीम का गठन किया गया है।

मौके पर डालसा सचिव रवि कुमार भास्कर ने कहा कि जिला विधिक सेवा प्राधिकार की ओर से गठित टीम जिले के निजि और सरकारी स्कूलों में जाकर न्यायालय की ओर से दिये गये निर्देशों के अनुपालन की पुष्टि कर रही है। टीम यह देख रही है कि स्कूलों के सभी बच्चों की सुरक्षा, कल्याण और संस्थागत सुरक्षा उपाय शामिल हैं या नहीं। उक्त टीम बच्चों, कर्मचारियों और जिम्मेदार अधिकारियों के साथ बातचीत करेगी और यदि कोई चूक, कमी या उल्लंघन दिखाई दे, तो उसका दस्तावेजीकरण किया जाएगा। वहीं टीम की ओर से बुधवार को दिल्ली पब्लिक स्कूल का निरीक्षण किया और इस संबंध में स्कूल के शिक्षकों से बच्चों की सुरक्षा सहित अन्य पहलुओं पर बात की। यह जानकारी डालसा सचिव रवि कुमार भास्कर ने दी।

बार-बार हड़ताल से एचईसी के बंद होने का खतरा : लीलाधर

संवाददाता/राँची।

हटिया प्रोजेक्ट वर्कर्स यूनियन के महामंत्री सह इंटक के राष्ट्रीय संगठन सचिव लीलाधर सिंह ने कहा है कि बार-बार की हड़ताल और औद्योगिक अशांति से एचईसी जैसे ऐतिहासिक उद्योग के बंद होने का खतरा मंडरा रहा है। इसके लिए हड़ताल का नेतृत्वकर्ता पूरी तरह जिम्मेदार होंगे। लीलाधर बुधवार को धुर्वा स्थित कार्यालय कक्ष में यूनियन की बैठक में बोल रहे थे। उन्होंने हड़ताल के दौरान कानून अपने हाथ में न लेने, कामगारों को धमकाने से बचने और जो कर्मचारी स्वेच्छा से काम पर जाना चाहें, उन्हें जाने देने की अपील की। सिंह ने कहा कि वर्ष 2019 में नीति आयोग ने एचईसी को बंद करने की सिफारिश कर दी थी, लेकिन पूर्व केंद्रीय भारी उद्योग मंत्री महेंद्र नाथ पांडेय, रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ और दिवंगत मजदूर नेता राणा संग्राम सिंह के प्रयासों से यह अब तक चालू है। यदि उद्योग बंद हुआ तो आने वाली पीढियां हमें कभी माफ नहीं करेंगी। उन्होंने कहा कि बंद कारखानों की जमीन कभी मालिक को वापस नहीं मिलती है। उन्होंने मौजूदा प्रबंधन की सराहना करते हुए कहा कि प्रबंधन बिना केंद्र, राज्य और एसबीआई की मदद के भी वेतन भुगतान कर रहा है। लीलाधर सिंह ने कहा कि उन्हें एचईसी से कोई भत्ता नहीं मिलता, लेकिन उनकी इच्छा है कि उद्योग चलता रहे, ताकि हजारों कर्मचारियों और उनके परिवारों की रोजी-रोटी सुरक्षित रह सके। बैठक के दौरान स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर यूनियन कार्यालय में सुबह 11 बजे झंडोत्तोलन करने और कामगारों की समस्याओं के समाधान पर चर्चा करने में सहमति बनी। बैठक की अध्यक्षता राजेंद्र कान्त महतो ने की। बैठक में गिरीश कुमार चौहान, दिलीप कुमार सिंह, खुर्शीद आलम सहित कई पदाधिकारी मौजूद थे।

एक नजर

हर घर तिरंगा'' रैली और नशा मुक्त शपथ का आयोजन

जमशेदपुर। ट्राइबल कॉलेज ऑफ़ नर्सिंग द्वारा बुधवार को हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत भव्य रैली का आयोजन किया गया। एनएसएस समन्वयक डॉ. कौशल किशोर के नेतृत्व में यह रैली कॉलेज परिसर से प्रारंभ होकर सिदरौल स्थित ऐतिहासिक जोड़ा मंदिर तक निकाली गई।

कार्यक्रम का उद्देश्य देशभक्ति की भावना को प्रबल करना तथा नागरिकों को अपने घर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए प्रेरित करना था। प्रतिभागियों ने हाथों में तिरंगा लेकर देशभक्ति के नारे लगाए और एकता व राष्ट्रीय गौरव का संदेश दिया।

अध्यक्ष श्री राम जी यादव ने अपने संदेश में कहा कि ''तिरंगा हमारी आन, बान और शान का प्रतीक है। हर नागरिक का कर्तव्य है कि वह इसे सम्मानपूर्वक फहराए और राष्ट्र निर्माण में योगदान दे।''

रैली के आरंभ में सभी प्रतिभागियों ने ''नशा मुक्त भारत बनाने की शपथ ली। ''हम संकल्प लेते हैं कि नशे से दूर रहेंगे और समाज को इसके दुष्प्रभावों से बचाने में सक्रिय भूमिका निभाएँगे।''

स्थानीय लोगों ने भी उत्साहपूर्वक स्वागत कर देशभक्ति और सामाजिक जागरूकता का माहौल बनाया।

इस कार्यक्रम में छात्र- छात्रों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में डॉ आरती गुप्ता छात्र कल्याण अधिष्ठाता, पल्लवी शर्मा, सुनील यादव के साथ अन्य शिक्षकों ने अपना महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सीजीपीसी के सलाहकार सुरेंद्र सिंह शिंदे के पिता स्वर्गीय केसर सिंह का दाह संस्कार स्वर्णरेखा घाट मांनगो में संपन्न हुआ

जमशेदपुर । सीजीपीसी के सलाहकार सुरेंद्र सिंह शिंदे के पिता सरदार केसर सिंह का दाह संस्कार दिन के 11 बजे स्वर्ण रेखा घाट मांनगो में कर दिया गया इससे पहले उनके शव यात्रा को तीन प्लेट गुरुद्वारा साहब ले जाया गया वहां पर समाज के प्रतिनिधियों द्वारा उनके शव पर शॉल ओढ़ाकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई उनके शव यात्रा में सेंट्रल गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भगवान सिंह चेयरमैन सरदार शैलेंद्र सिंह गुरमीत सिंह वरीय उपाध्यक्ष नरेंद्र पाल सिंह भाटिया चंचल सिंह महासचिव अमरजीत सिंह गुरचरण सिंह बिला कोषाध्यक्ष गुरनाम सिंह बेदी अकाली दल के प्रधान सुखदेव सिंह खालसा रामकृष्ण सिंह रविंद्र सिंह सलाहकार सुरजीत सिंह खुशीपुर बलवंत सिंह शेरों कश्मीर सिंह परविंदर सिंह सोहल सुखविंदर सिंह राजू सुखदेव सिंह बिट्टू सरबजीत सिंह ग्रेवाल जसवंत सिंह जसु नौजवान सभा के प्रधान अमरीक सिंह महासचिव सुखवंत सिंह सुक्कू विक्की सिंह सभी गुरुद्वारा कमेटियों के पदाधिकारीयो एवं सेंट्रल स्त्री सभा की प्रधान रविंदर कौर चेयरमैन कमलजीत कौर संरक्षक दलबीर कौर महासचिव सुखवंत कौर परमजीत कौर शामिल हुए

उनके पुत्र जसमेर सिंह सुरेंद्र सिंह शिंदे ने बताया कि उनकी अंतिम अरदास का कार्यक्रम 21 अगस्त को दोपहर 12 बजे गुरुद्वारा साहब तीन प्लेट में रखा गया है

बोलेरो के साथ एक चोर को गिरफ्तार

बेरमोः आसिफ अंसारी । बोकारो जिला बेरमो अनुमंडल बोकारो थर्मल थाना में कांड संख्या - 55/25 के तहत हनुमान मंदिर, बीटीपीएस रोड से अपने बोलारो पिक अप वेन की चोरी की शिकायत जितेंद्र कुमार ने की थी। 12 अगस्त 2025 को हजारीबाग के थाना केरेडारी के निवासी संतोष तुरी की गिरफ्तारी हुई। उसके द्वारा बताने पर थाना केरेडारी के ग्राम बुंडू के निवासी शराफत हुसैन ऑफ शराफत अंसारी के घर से गाड़ी बरामद की गई। पुलिस टीम ने थर्मल थाना प्रभारी पिंकू कुमार यादव के नेतृत्व यह सफलता प्राप्त की। संतोष को गिरफ्तार कर पुलिस बोकारो ले आई और जेल भेज दिया गया।

राष्ट्रीय जनता दल पिछड़ा प्रकोष्ठ हजारीबाग जिला अध्यक्ष बने कुंज बिहारी साव

हजारीबाग। राष्ट्रीय जनता दल पिछड़ा प्रकोष्ठ हजारीबाग जिला अध्यक्ष बनने पर लोकसभा पूर्व प्रत्याशी कुंज बिहारी साव ने प्रदेश अध्यक्ष संजय सिंह यादव एवं राष्ट्रीय जनता दल पिछड़ा प्रकोष्ठ प्रदेश अध्यक्ष सुनील साहू जी को धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि मेरा सौभाग्य है कि राष्ट्रीय जनता दल ने हमें हजारीबाग जिला का अध्यक्ष बनाने का काम किया मैं विश्वास दिलाता हूं कि लगन और मेहनत से हजारीबाग जिला में राष्ट्रीय जनता दल को ऊंचाइयों तक ले जाने का काम करूंगा । बधाई देने वालों में नंदलाल साव, रणधीर साव एवं सैकड़ो कार्यकर्ता ने बधाई दिए।

एडिसन पब्लिक स्कूल में श्री कृष्ण साज -सज्जा प्रतियोगिता

टाटीझरिया(हजारीबाग)। एडिसन पब्लिक स्कूल,टाटीझरिया में श्री कृष्ण जन्माष्टमी को लेकर जुनियर बच्चों के बीच राधा - कृष्ण सज्जा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जूनियर कक्षाओं के विद्यार्थियों ने श्री राधाकृष्ण का वेष - भूषा धारण कर अपनी प्रस्तुति दिया। राधाकृष्ण के रूप शय्या में छोटे - छोटे बच्चे बेहद आकर्षक लग रहे थे। प्राचार्या सुधा कुमारी ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम से बच्चों में छिपी हुई प्रतिभा में निखार आता है।इनमें बेहतर अभिनय करने की क्षमता बढ़ता है। कार्यक्रम में अपर्णा गोस्वामी,ममता कुमारी,अनुराधा कुमारी,मनीषा कुमारी और संगीता कुमारी ने सहयोग किया। बेहतर प्रदर्शन करने वाले बच्चों को प्रमाण पत्र और पुरस्कार दिया गया।

कुलगो में खाताधारकों के लाखों फर्जी निकासी कर स्टेट बैंक का सीएससी संचालक फरार

न्यूज धमाका।

गिरिडीह । एक ओर जहां सीएसपी व सीएससी के पदुर्भाव से देश में बैंकिंग प्रणाली को एक नया आयाम मिला है। खाताधारकों को अपने विभिन्न कार्यों में सहूलियत मिली है, तो वहीं बदनीयती की शिकायतें सामने आने लगी है। एक ऐसा ही मामला गिरिडीह जिले से सामने आया है।

जिले में डुमरी थाना क्षेत्र अंतर्गत कुलगो गांव के दर्जनों ग्रामीणों ने बुधवार को एक हस्ताक्षरयुक्त आवेदन झाएकिमयू के केन्द्रीय अध्यक्ष गंगाधर महतो और कोषाध्यक्ष नुनूचंद महतो के नेतृत्व में डुमरी थाना में देकर कुलगो स्थित एसबीआई इसरी बाजार की सीएससी संचालक पर उपभोक्ताओं का लाखों रुपयों की जालसाजी एवं धोखाधड़ी करके गबन कर फरार हो जाने की शिकायत की है।

उक्त आवेदन की प्रतिलिपि डुमरी एसडीएम कार्यालय,एसडीपीओ डुमरी एवं एसबीआई प्रबंधक इसरी बाजार शाखा को दिया गया। ग्रामीण खाताधारकों ने आवेदन पत्र में लिखा कि कुलगो में संदीप कुमार रविदास पिता कैलाश रविदास ग्राम चालमो सीएससी केन्द्र चलाकर उनलोगों से पैसा जमा कराता था, लेकिन इस केन्द्र के संचालक नें केन्द्र बंद कर दिया और फरार हो गया है।

लिखा कि मोबाईल पर सम्पर्क किया जाता है, तो वह मोबाईल नहीं उठा रहा है। वहीं जब बैंक खाते की डिटेल जमाकर्ताओं द्वारा निकाला गया, तो विभिन्न प्रकार की गड़बड़ियां सामने आई हैं। जैसे गलत तरीके से निकासी करना। जब इन कागजों को लेक र संबंधित शाखा में जाते है, तो बैंक यह कहकर भगा देता है. कि ये सब कागज फर्जी है और इनका शाखा से कोई लेना देना नहीं है। जमा और निकासी का सारा जिम्मेवार सीएससी केन्द्र अभिकर्ता है।

लिखा कि सीएससी केन्द्र के जितने भी जमाकर्ता हैं, उनके खातों में से पूर्णरुपेण पैसा निकासी कर शुन्य बैलेंस कर उक्त संचालक फरार हो गया ।

वहीं आवेदन में जिन लोगों ने अपने साथ ठगी करने की शिकायत की है, उनमें सोमर ठाकुर का 3 लाख,उमेश साव 5 लाख,दासो रविदास 10 लाख 50 हजार,भानु रविदास 10 लाख 65 हजार,बुचून देवी 14 हजार,लिलावती देवी 15 हजार, जितनी देवी 40 हजार ,रतनी देवी 25 हजार, अस्वा देवी 1 लाख 60 हजार, इंजरी देवी 6 हजार 500,सैरुन खातुन 48 हजार,इंदर रविदास 40 हजार मालती देवी 40 हजार,सरिता देवी 1 लाख 50 हजार, रंजित रविदास 15 हजार,कुंती देवी 20 हजार,ललीता देवी 7 लाख 12 हजार,अनील कुमार दास 6 लाख गोबिन्द महतो 1 लाख,दामोदर साव 1 लाख 20 हजार,हेमा देवी 4 लाख 32 हजार,समसुद्दीन अंसारी 2 लाख,झुमरी देवी 3 लाख,रीता देवी 2 लाख 70 हजार आदि का गबन कर फरार हो गया। इस मामले में बताया गया कि भागने के पूर्व सीएससी संचालक कल को स्थित अपने कार्यालय का सारा सामान लेकर भागा है। जिससे उक्त भवन के मकान मालिक स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं बैंक कर्मियों पर भी उंगलियां उठने लगी हैं।

उपरोक्त ग्रामीणों ने यह भी बताया कि सीएससी संचालक ने आसपास के आठ गांवों के सैकड़ों लोगों से इस तरह की ठगी की है।

नारायणपुर प्रखंड में हर घर तिरंगा-स्वच्छता अभियान के तहत रैली और साफ-सफाई कार्यक्रम

न्यूज धमाका।

संवाददाता/जामताड़ा । बुधवार को विभागीय निर्देशानुसार जामताड़ा जिला अंतर्गत नारायणपुर प्रखंड के मंझलाडीह पंचायत में हर घर तिरंगा, हर घर स्वच्छता, स्वतंत्रता का उत्सव, स्वच्छता के संग अभियान के तहत कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंझलाडीह ग्राम के उत्क्रमित मध्य विद्यालय में शिक्षक मो. गाजी, दिवाकर मंडल, सविता तुरी, मो. निजामुद्दीन अंसारी, आईसीटी शिक्षक प्रसनजीत भंडारी, जल सहिया सुबोदी टुडू एवं रहीमा खातून के साथ-साथ ग्रामीण मधुसूदन मंडल, हरिप्रसाद मुर्मू, खलील अंसारी और विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

ब्लॉक वॉश कोऑर्डिनेटर लाल मोहम्मद के सहयोग से विद्यालय एवं आसपास के क्षेत्र में साफ-सफाई अभियान चलाया गया। इसके बाद रैली निकालकर हर घर तिरंगा, हर घर स्वच्छता का संदेश पूरे ग्राम में प्रसारित किया गया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को स्वच्छता बनाए रखने एवं स्वच्छ सुजल ग्राम बनाने का शपथ दिलाया गया।

इसी प्रकार प्रखंड के अन्य ग्रामों के विद्यालयों में भी शिक्षकों एवं जल सहिया की अगुवाई में स्वच्छता कार्यक्रम संपन्न हुआ, जिसमें ग्रामीणों और बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह अभियान स्वतंत्रता दिवस की तैयारियों के साथ स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने का एक महत्वपूर्ण प्रयास रहा।

मजदूर नेता ने गंगाधर महतो ने तेलियाटुंडा में 25 केवीए के विद्युत ट्रांसफार्मर का किया उद्घाटन

न्यूज धमाका।

डुमरी। डुमरी प्रखंड के खैराटुंडा पंचायत अंतर्गत तेलियाटुंडा (नाथडीह)में बुधवार को विद्युत ट्रांसफार्मर का उद्घघाटन झारखंड एकता किसान मजदूर यूनियन के केंद्रीय अध्यक्ष गंगाधर महतो और पंचायत समिति सदस्य कुन्ती देवी ने संयुक्त रूप से नारियल फोड़ कर एवं फीता काट कर किया।

बताया जाता है कि 10 दिन पूर्व गांव में लगा 25 केवीए का विद्युत ट्रांसफार्मर जल गया था। जिसकी जानकारी ग्रामीणों ने यूनियन को दी। साथ ही नया ट्रांसफार्मर लगाने की दिशा में पहल करने का आग्रह किया। यूनियन के प्रयास से बिजली विभाग के द्वारा 25 केवीए का ट्रांसफार्मर उपलब्ध करा दिया गया। जिसका उद्घाटन करने के बाद यूनियन के केंद्रीय अध्यक्ष ने कहा कि ग्रामीणों की समस्याओं के समाधान हेतु यूनियन हमेशा प्रयत्नशील रहता है।

इस दौरान यूनियन के केंद्रीय उपाध्यक्ष भगतु रविदास उर्फ रवि कुमार,केंद्रीय महासचिव रविंद्र कुमार,केंद्रीय महासचिव साहिद अंसारी, प्रखंड अध्यक्ष राजेंद्र यादव, प्रखंड महासचिव भुवनेश्वर रविदास, प्रखंड कोषाध्यक्ष सुरेश ठाकुर,प्रखंड सहायक सचिव भुनेश्वर महतो,मोती रविदास,अशीस सिंह, प्रमोद रविदास,नारायण दास,रामू रविदास आदि ग्रामीण उपस्थित थे।

स्वच्छ सुजल ग्राम बनाने का संकल्प, रैली और सफाई अभियान संपन्न

न्यूज धमाका।

संवाददाता/जामताड़ा । विभागीय निर्देशानुसार जामताड़ा जिला अंतर्गत नारायणपुर प्रखंड के मंझलाडीह एवं पबिया पंचायत में हर घर तिरंगा, हर घर स्वच्छता, आजादी का उत्सव, स्वच्छता के संग अभियान के तहत स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किए गए।

पबिया पंचायत के उत्क्रमित उच्च विद्यालय पबिया में शिक्षिका कुमारी भानु प्रिया दत्ता, शिक्षक शयाम नंदन किशोर, विमल चंद्र दे, अमिंदर कुमार सिंह, विकास कुमार चौधरी तथा जल सहिया सीमा दुबे (ग्राम पबिया) ने विद्यालय के छात्र-छात्राओं के साथ मिलकर स्वच्छता अभियान चलाया। कार्यक्रम में प्र-खंड वॉश कोऑर्डिनेटर लाल मोहम्मद का विशेष सहयोग रहा। इस दौरान विद्यालय एवं आसपास के क्षेत्र में साफ-सफाई की गई और रैली निकालकर गांव में हर घर तिरंगा, हर घर स्वच्छता का संदेश दिया गया।

सभी विद्यार्थियों को स्वच्छता बनाए रखने और स्वच्छ सुजल ग्राम बनाने की शपथ दिलाई गई। ग्रामीणों को भी अभियान में शामिल होने के लिए प्रेरित किया गया।

इसी प्रकार प्रखंड के अन्य गांवों के विद्यालयों में भी शिक्षकों एवं जल सहिया के नेतृत्व में स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें बच्चों और ग्रामीणों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह अभियान स्वतंत्रता दिवस की तैयारियों के साथ स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने का एक सराहनीय प्रयास रहा।

ग्राम सभा के अधिकार एवं जिम्मेदारियों पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

ईचागढ़। ईचागढ़ प्रखंड सभागार में अनुसूचित क्षेत्र की ग्राम सभा के अधिकार एवं जिम्मेदारी विषय पर दो दिवसीय प्र-खंड स्तरीय दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला

में लगभग 100 पंचायत प्रतिनिधियों एवं ग्राम प्रधानों ने सहभागिता की। कार्यशाला का शुभारंभ प्रखंड विकास पदाधिकारी एकता वर्मा ने पंचायत प्रतिनिधियों के साथ संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। उन्होंने पंचायत प्रतिनिधियों से अपने संवैधानिक अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहने तथा सामूहिक प्रयासों से ग्राम विकास सुनिश्चित करने का आ''ान किया। कार्यशाला में राज्य स्तरीय मास्टर ट्रेनर अजय कुमार मिश्र एवं रंजीत कुमार आचार्य द्वारा पंचायत प्रतिनिधियों को ग्राम सभा की भूमिका, अधिकार, जिम्मेदारियाँ एवं संवैधानिक प्रावधानों के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण का उद्देश्य ग्राम सभा की पारदर्शिता, जवाबदेही और सहभागिता को बढ़ाना रहा। प्रतिनिधियों ने कार्यशाला में गहरी रुचि दिखाई और ग्राम स्तर पर बेहतर कार्य प्रणाली अपनाने की प्रतिबद्धता जताई। कार्यशाला के माध्यम से पंचायत प्रतिनिधियों को न केवल अपने अधिकारों और कर्तव्यों की जानकारी मिली, बल्कि उन्हें ग्राम सभा की भूमिका को सशक्त करने और विकास कार्यों को गति देने की प्रेरणा भी प्राप्त हुई।

भाकपा माले द्वारा मोदी व ट्रंप का पुतला दहन किया गया

- **किसान,गरीब,दलित,अल्पसंख्यक, मजदूर, दबे कुचले हेतु आंदोलन और तेज करेंगेः राजकुमार यादव**
- **किसानों के साथ जुर्म नहीं होने देगा माले : पूरन महतो**
- **गिरिडीह में पूरे राज्य में सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार है,माले विभाग के खिलाफ आवाज बुलंद करेगा :अशोक पासवान**

न्यूज धमाका।

गिरिडीह। किसानों के हित में,अखिल भारतीय किसान महासमा के बैनर तले देशव्यापी कार्यक्रम जो पापरवाटांड़ में सभा के रूप में हुआ।किसान नेताओं ने मोदी के खिलाफ जमकर हल्ला बोला। ट्रंप के खिलाफ जमकर नारा लगा,किसान नेता पूरन महतो,जिला सचिव अशोक आसवन,सचिव विजय सिंह, राष्ट्रीय कार्यकारणी कौशल्या दास,जिला उपाध्यक्ष रामेश्वर चौधरी, जिला सह सचिव नागेश्वर महतो, धनवार प्रखंड अध्यक्ष राजकुमार दास, धानेश्वर पासवान,मुन्ना राणा,माले नेत्री जयंती चौधरी,राम किशुन यादव,पवन यादव,हुबलाल कोल्ह आदि ने संबोधित किया। साथ ही साथ माले नेता राजेश सिन्हा,कन्हाई पांडेय,मेहताब अली मिर्जा,अजीत राय आदि ने भी संबोधित किया। सभा में सैकड़ों की भीड़ थी, महिलाएं पुरुष सामिल थे।

- **सभा की समाप्ति के बाद जुलूस के रूप में प्रतिवाद मार्च निकाला गया**

चौराहे पर मेन रोड में मोदी और ट्रंप का पुतला फूंका गया। उसके बाद जुलूस के रूप में डीसी कार्यालय तक मार्च पास करते सभी नेता और कार्यकर्ता गए। गेट के पास माले के पूर्व विधायक ने संबोधन में कहा कि मोदी सरकार कहता है कि मोदी का 56 इंच का सीना है, किंतु ट्रंप के सामने वह सीना दिख गया,ट्रंप लगातार भारत की बेइज्जती कर रहा है किंतु पीएम मोदी की आवाज बंद है। कहा कि यदि अमरीका भारत पर टैरिफ 50% लगाया है तो भारत को अमरीका के सामानों पर 50% टैरिफ लगाना चाहिए।

किसान नेता पूरन महतो और विजय सिंह ने कहा कि मोदी सरकार वोट को चोरी कर के सरकार में आए है, जिसको आज पूरा भारत देख रहा है,जनता को अब धर्म के नाम पर और झूठे वादे का झांसा दे-खकर जीत नहीं सकता है भाजपा सरकार,गरीब जनता को तंग नहीं करने देंगे। जिला सचिव अशोक पासवान ने कहा कि अभी तो भाकपा माले ने सांकेतिक कार्यक्रम किया है जल्द गिरिडीह में बड़ा आंदोलन करेंगे। माले नेता राजेश सिन्हा,कन्हाई पांडेय,मेहताब अली मिर्जा,रामलाल मुर्मू,शंकर पांडेय,दारा सिंह,अजीत राय आदि नेताओं ने कहा कि अफसरशाही के कारण जनता परेशान है, सीसीएल क्षेत्र में बड़े बड़े कोयला चोर के साथ प्रशासन की मिली भगत है,सीसीएल कर्मी और अफसर घुस लेकर अवैध धंधा करवाते है,सीसीएल क्षेत्र में आवासीय नहीं बनता है,गरीबों को घर बनाने नहीं देता है जबकि अमीरो के सामने जी हुजूरी करते है सीसीएल कर्मी जल्द सीसीएल क्षेत्र में लुटेरों कर्मी के खिलाफ और जीएम के खिलाफ हल्ला बोल करेंगे।

डीसी के अनुपस्थिति में डीडीसी को सात सूत्री ज्ञापन सौंपा गया। सिन्हा ने बताया कि डीसी आज गिरिडीह ऑफिस में उपस्थित नहीं थे। उसके एवज में डीडीसी गिरिडीह को ज्ञापन देने के लिए उपायुक्त ने कहा तो किसान नेता ने उनको ज्ञापन देकर,मांग रखकर वापस आए।

मांगों में अमरीका द्वारा टैरिफ रद्द करो, हजारीबाग के बड़कागांव में अडानी के द्वारा एनटीपीसी के जरिए किसानों का जमीन हड़पा जा रहा है, जल्द उसको रद्द करो, राज्य सरकार द्वारा गैरमजूरवा जमीन का रसीद जल्द काटना होगा, वानभूमि पर सालों से रहने वाले किसान आदिवासी को वन पट्टा देना होगा,सीसीएल क्षेत्र में बसने वाले को आवासीय प्रमाण पत्र देना होगा,भूमाफिया के द्वारा जमीन हड़पने का काम बंद हो,जमुआ प्र-खंड के अंतर्गत दलिया का पत्थर खादान आबादी के बीच है तत्काल बंद करो आदि शामिल थे।

मौके पर तबारक,नौशाद,कन्हैया सिंह,मनीष मंडल,पिंटू,प्रियंका उपाध्याय,उदय सिंह, राजकुमार राय,मनोहर,दिलीप राय,मसुदन कोल,मजहर आदि मौजूद थे।

आज दर्जनों ने माले का हाथ थामा।

साक्षी जैन को मिला विश्व भूषण सम्मान

न्यूज धमाका।

निहारिका साहित्य मंच कंट्री ऑफ इंडिया फाउंडेशन द्वारा तृतीय वार्षिकोत्सव व विश्वभूषण सम्मान समारोह का आयोजन अनिल राजभर केबिनेट मंत्री उप्र सरकार के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ, जहा कालापीपल नगर की कवयित्री साक्षी जैन को विश्वभूषण सम्मान के साथ सम्मानित किया गया।
निहारिका साहित्य मंच कंट्री ऑफ इंडिया फाउंडेशन ट्रस्ट का तृतीय वार्षिकोत्सव भव्य तरीके से उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के निराला सभागार में सम्पन्न हुआ। संस्थापिका डॉ रीमा सिन्हा एवं अध्यक्ष डॉ अब्दुल अज़ीज़ सिद्दीकी द्वारा आयोजित इस आयोजन में कई प्रांतों से आये साहित्यकार एवं समाजसेवियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन कर मा सरस्वती की वंदना के साथ किया गया। मंचासीन मुख्यातिथि ने अपने व×क्तव्य में साहित्यिक पक्ष को बखूबी दर्शाया। उन्होंने कहा कि साहित्य संवेदना से चलती है, लेखनी से हृदय तृप्त अवशय होता है लेकिन भौतिक वाद युग में इस क्षेत्र में पैसे न के बराबर मिलने की वजह से लोग इसे कम आंकने लगे हैं।
कार्यक्रम में देशभर के साहित्य से जुड़े लोगों को अपनी स्वरचित लिखी हुई रचनाओं के साथ आमंत्रित किया गया था, जहा उन्हें कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मंत्री अनिल राजभर के द्वारा सम्मानित किया गया। इसमें देश के साहित्यकार कवि व वरिष्ठ पत्रकारों का सम्मान किया गया। इस आयोजन में कालापीपल की कवयित्री साक्षी जैन को भी आमंत्रित किया गया जहां उन्हें विश्व भूषण सम्मान 2025 से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर हिंदी साहित्य से जुड़े लोगों ने उन्हें बधाई दी।

अंतरराष्ट्रीय मंच की ओर कदम बढ़ाते अमन शुक्ला
-योगकुलम के छात्र ने जीते दो गोल्ड मेडल

प्रेरणा बुडाकोटी

युवा योग खिलाड़ी अमन शुक्ला ने हाल ही में आयोजित दो बड़ी प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक जीतकर योगकुलम का नाम रोशन किया है। योगकुलम के संस्थापक मनीष प्रताप सिंह ने उनकी इस उपलब्धि पर उन्हें सम्मानित किया। अमन, जो वर्तमान में योगकुलम से योग डिप्लोमा कोर्स कर रहे हैं,
15 जुलाई 2025 को दिल्ली के राजीव गांधी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, सिंघु बॉर्डर में आयोजित 2nd SGAFI Open National Championship में प्रथम स्थान पर रहे। इसके बाद 3 अगस्त को सिंगरौली जिला स्तरीय योग प्रतियोगिता (निगाही, अंबेडकर भवन) में अंडर-21 कैटेगरी में भी उन्होंने स्वर्ण पदक जीता।
अमन ने अपनी सफलता का श्रेय योगकुलम में मिले उच्चस्तरीय प्रशिक्षण, संस्थापक मनीष प्रताप सिंह और सभी योग शिक्षकों के मार्गदर्शन को दिया। उन्होंने कहा, ''योगकुलम ने मुझे राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार किया, अब मेरा लक्ष्य अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत का नाम रोशन करना है। संस्थापक मनीष प्रताप सिंह ने कहा कि अमन की यह उपलब्धि आने वाले खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा है, और योगकुलम प्रतिभाशाली खिलाड़ियों के लिए जल्द ही एक विशेष प्रतियोगिता बैच शुरू करेगा।

श्रीमती प्रतिभा रंगेला (मम्मी) को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं

न्यूज धमाका।

श्री स्व राजाराम रंगेला, स्व श्रीमती सुशील रंगेला , ओमप्रकाश रंगेला , अंतर्राष्ट्रीय कवि अमन रंगेला,नमन रंगेला जी, श्री सपन रंगेला ,श्रीमती नितू रंगेला ,महिमा रंगेला ,गगन रंगेला ,श्री अजय रंगेला ,श्रीमती रानी रंगेला, ग्लोरि रंगेला,सारा रंगेला, निशा जगदीश वैशय , सुनीता संजय सोलंकी , माया संतोष चुरहे , ममता शशिकांत मुंजारिया ,नेहा, शुभम, स्व गजाननं वैध ,सुभद्रा वैध सतीश वैध ,सविता वैध , तन्मय वैध, कल्पना रमेश करिये , वर्षा विष्णु माचेवार , ज्योति जय माचेवार , सलोनी , कनक, माही, लोकेश एवं समस्त परिवार

आजादी संग कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव-

धरा आज प्रसन्न हुआ है
यह कैसा भाग्य उदय हुआ है
स्वतंत्र हुआ जब भारत अपना
भारतवासी व्याकुल थे कितना?

आज यह संयोग जग आया है
हम सब ने कृष्ण जन्माष्टमी
आजादी संग मनाया है
धरा जब श्री कृष्ण को पाया है
देश का गौरव सदा ईश्वर की कृपा
से बढ़ाया है ।

प्रभु की कृपा जब - जब बरसती है
हम सबकी सृष्टि तब- तब हंसती है
नमन है भारत देश के वीरों को
साहसी निष्ठावान धीरों- गंभीरो
को।

हर ओर हमारे ईश्वर का वास हो
भारत में स्वतंत्रता का आभास हो
सृष्टि पर प्रभु का सदैव निवास हो
ऐसी मनोकामनाएं ऐसी हमारी
आस हो।

आज तन- मन खिल आया है
भारत ने श्री कृष्ण को पुनः पाया है
इस आजादी में हमने अपनों को
गंवाया है
ईश्वर की कृपा हमने सदा ही
पाया है।

आजादी संग हम तेरा जन्म उत्सव
मनायेंगे ,
गगन से धरा पर ईश्वर भी पुष्प
बरसायेंगे
जब - जब तिरंगा लहराता है
आकाश धरा भी खिल जाता है।

उत्कृष्ट हमारा भाव हो
ना किसी का अभाव हो
ऐसी हमारी मनोभाव हो
हम भारतीयों का अच्छा निरंतर
स्वभाव हो।

आज हम भक्ति रस में खो जायेंगे
जब अपने कृष्ण को पुनः पायेंगे
हमारा तिरंगा भी लहरायेगा
श्री कृष्ण के जन्म का उत्सव को वो
भी मनायेगा।

आओ मिलकर करें वंदना प्यारा
देश हमारा है ,
सबसे प्यारा - राज दुलारा आंखों
का तारा है ,
संप्रभुत्ता का यहां वास हो
भारत विश्व में सबसे खास हो ।

श्री कृष्णा राधे का नाम हो
भारत देश अपना महान हो
वीरों की गाथा हम गाते हैं
भारत मां के आंचल में शीश
कटाते हैं।

ज्योति राघव सिंह
वाराणसी-(उत्तर प्रदेश)
वर्तमान पता - लेह-लद्दाख

खुद को साबित किया

मैं वास्तव में कौन हूँ कैसा हूँ, किसका हूं, ये सब मैंने तब जाना,
जब ताज पहनाकर खोटे सिक्कों से मेरी तुलना करवाया,
जब जुगनू को तारें बनाकर मेरी मन्नतों को झूठा ठहराया,
जब हरी झंडी दिखाकर बिना पटरी के सफर करवाया,
जब झूठे दिलासे देकर मेरी मजबूरी का ठहाका लगाया,
जब दुष्कर्म करने वालो के सम्मुख मेरे संस्कारों को दोषी बताया,
जब अपनों की झूठी गुलामी करते लोगों ने मेरे स्वाभिमान को ललकारा,
जब मेरी ही कमाई पर मुझे दो आने का मोहताज बनाया, जब आंखों से ताना मारकर मेरी हक की आवाज को दबाया, लेकिन में हारा नहीं.....
अपनों से ज्यादा अपने अस्तित्व से प्यार किया,
सभी की बातें सुनकर केवल अपने मन की आवाज को उत्तीर्ण रखा,
अकेला होकर भी अपने सपनों को अपना साथी चुना,
रोना आया फिर भी आंसुओं को पलकों तक ना आने दिया,
तूफानी राहों को अपने हौसले से समतल बनाया,
कभी भूखा तो कभी प्यासा रहा लेकिन कभी खुद को असहाय ना जतलाया,
लोगों ने कांटों से भरी चादर बिछाई फिर भी मैंने जीत की गुहार लगाई,
धोखा खाया जब साधी ने भी ठुकराया, भला करके भी लोगों ने बुरा बनाया,
शब्दों के व्याख्यान से ज्यादा खुद को साबित कर दिखाया।

प्ररेणा बुड़ाकोटी

पन्द्रह अगस्त

भारत में अंग्रेज
ईस्ट इंडिया कंपनी
लेकर के पधारे
व्यापार के बहाने
अपनी पकड़ बनाए
धीरे धीरे अपना अधिकार
पूरे भारत पर जमाए
भारत के शासक बन
भारत को गुलाम बनाए
फूट डालो राज्य करो
का फार्मूला अपनाए
भारत के कुछ नेताओं ने
अपनी आवाज बुलंद की
कुछ ने अपना खून बहाया
कुछ ने आंदोलन अपनाया
सुभाष चंद्र बोस भगत सिंह
चंद्रशेखर आजाद ने
गरम दल का परिचय दिया
गांधी नेहरू लोकमान्य ने
जन आंदोलन करके
अंग्रेजों की बीन बजाई
भारत छोड़ो आंदोलन कर
अंग्रेजों को भारत से
यूनियन जैक सहित
भारत से जाने को
मजबूर किया
पन्द्रह अगस्त उन्नीसौसैतालिस को
पंडित जवाहरलाल नेहरू ने
यूनियन जैक की जगह
भारती तिरंगा फहराया
स्वतंत्रता का बिगुल बजा
भारत के कोने कोने में
तिरंगा गीत गाकर
स्वतंत्रता का उत्सव मनाया गया
जयहिंद जय भारत वंदेमातरम
से भारत गूंज उठा
आओ हम सब मिलकर
यह पावन भारतीय त्योहार मनाएं

विनोद कुमार सीताराम दुबे
शिक्षक/ हिंदी प्रचारक भांडुप
मुंबई महाराष्ट्र

संस्थापक इन्द्रजीत पुस्तकालय सीताराम ग्रामीण साहित्य परिषद सामवन्ती ग्राम महिला विकास मंडल जुडपुर मड़ियाहूं जौनपुर उत्तर प्रदेश

बाइस मिनट

हिंदुस्तान की जब बात हो
तो मैं रास्ते चुनता नहीं हूं
धरती माता की जब बात हो
तो मैं किसी की सुनता नहीं हूं।

आतंकिस्तान हर तरफ आतंकी
छुपा रहा था
परमाणु बम फोड़ने की धमकी दे
रहे था
आतंकियों को मिटाने की जो राह
है चलता
हिंदुस्तान बिना मारे रुक नहीं
सकता।

जानबूझकर नाम पूछ कर
मारा हिंदुत्व को नापाक है
उनके सर कुचलने
निकले अपने घर से ब्रह्मोस हैं।

उनका ना कोई धर्म है
ना कोई मजहब है
पहलगाम में पच्चीस मिनट की
बात है
चित्कार करती सिर्फ आतंकी
वारदात है ।

हिंदुस्तान के वीरों ने भी
बाइस मिनट में ही निपटा दिया।
आतंकिस्तान को घुटनों के बल ला
दिया ।।
आतंकियों के नौ ठिकाने तहस-
नहस किया ।
वह अपनी ही करनी पर हाय हाय
चिल्ला दिया ।।
ब्रह्मास्त्र और राफेल ने
आतंकिस्तान को बर्बाद किया।
चाइना के चिंग चांग को पिंग पांग
बना दिया।।

एक युद्ध ने दिखाया हिंदुस्तान
का दम
विश्व का पहला शक्तिशाली
बनाया बम
तोड़ दिया अपने दुश्मन देश का
भ्रम
सबने देख लिया हिंदुस्तान का
दम।

प्रेमलता कुमारी/ जमशेदपुर
झारखंड

स्वतंत्र नहीं, स्वच्छंद हैं हम

(सुधाकर आशावादी-विनायक फीचर्स)

स्वतंत्रता हर किसी को रास नही आती। खासकर आम आदमी को। जिसे देखो वही आम आदमी का नाम लेकर ख़ास आदमी बनने की फ़िराक़ में रहता है। कहने को तो अपना तंत्र है लेकिन अनुशासन भी जरूरी होता है। अनुशासन को बंधन समझने वाले भला अनुशासन में कैसे रहें, पराधीन सपनेहुँ सुख नाहिं तो यह समझते हैं, मगर स्वतंत्रता का अर्थ समझने की ज़हमत ये नहीं उठाते। तनिक सा मुफ्त का चुग्गा इनके सामने डाल दो, तो ये उस चुग्गे पर अपने सर्वाधिकार सुरक्षित समझ बैठते हैं। अपने एक मित्र है, स्वयं को बड़ा क्रांतिकारी सिद्ध करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ते। उनकी जुबान पर हमेशा गरीब,मजदूर, वंचित शोषित जैसे शब्द चढ़े रहते हैं, मगर उनके कपड़ों में सफेदी की झंकार बार बार लगातार मजदूरों की मेहरबानी से आती है। वह व्यवस्था को गालियां भी खूब देते हैं, मगर अपनी आय के स्त्रोत कभी उजागर नही करते। देश का हाल कुछ ऐसा ही है, मजदूर कभी अमीर नहीं होते, किन्तु उनका नाम लेकर उनके नाम पर दुकानदारी करने वालों की आय दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ती है। कभी नौकरी के बदले जमीन लेने के घोटाले उजागर होते हैं, कभी बिना जेब से पैसा खर्च किये करोड़ों के मुनाफे कमाए जाते हैं। बहरहाल व्यवस्था ही कुछ ऐसी है। साइकिल की सवारी करने वाला कब प्राइवेट वायुयान से आसमान में विचरण करने लगे, इसका पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता। वैसे भी कब किसका भाग्य बदल जाए, यह कोई नहीं जानता। सर्वेंट क्वार्टर में रहकर जनसंख्या वृद्धि में अतुलनीय योगदान देने वाले कब अपने नकारा बच्चों को करोड़पति बना दें, कुछ कहा नहीं जा सकता। लोकतन्त्र का सत्य भी यही है, खानदानी दुकानें चल रही हैं, फ्यूज बल्बों को इकट्ठा करके मार्केटिंग की जा रही है। चुके हुए कारतूसों को प्रयोग करने का प्रयास किया जा रहा है।

नैतिकता, ईमानदारी जैसे शब्द राजनीति के शब्दकोश से गायब हो चुके हैं। चोरी और सीनाजोरी जैसे मुहावरों ने बेशर्मी से राजनीति में अपना स्थान पक्का कर लिया है। चोर को चोर कहना ही गुनाह हो गया है। यही तो स्वच्छंदता है, जो लोकतंत्र ने जनमानस को सौंप दी है। अब सार्वजनिक क्षेत्र में नजर डालें, तो बदला हुआ नज़ारा नजर आता है। सड़कें पैदल चलने के लिए हैं या पीकदान हैं, समझा नहीं जा सकता। राह चलते कब कौन आपके सामने अपने मुँह की गंदगी बीच सड़क पर उगल दे, समझना मुश्किल है। कब कौन बड़ी हवेली में संभ्रांत लोगों के बीच बैठकर अपनी एक आँख दबा दे, कब कि सके गले पड़ने का नाटक करे, कब अपनी माता बहिनों सम महिलाओं के सम्मुख कुछ उछाल दे, इसका पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता। करना कुछ नहीं है, केवल चलती हुई गाड़ी के सम्मुख अवरोध उत्पन्न करने में महारत हासिल करने की जिद पूरी करनी है। जिन्हें अपना इतिहास मालूम नहीं, वे देश का भूगोल बदलने की बात करते हैं। जो विदेशों में जाकर रुदन करते हैं, कि उनके मुँह पर टेप चिपका कर उनके बोलने पर पाबंदी लगाई जाती है। वही हर किसी को गालियां देने के लिए स्वच्छंद हैं। अपने गिरेवां में झाँकने की जगह हर कोई पड़ोसी की थाली पर नजर गड़ाए बैठा है। राष्ट्र द्रोही हरकत करने पर भी उसे लज्जा नहीं आती। कहने को हम अपनी लोकतांत्रिक व्यवस्था पर इतराने में माहिर हैं,मगर विषवमन जारी है। कार्यपालिका स्वयं को देश के संविधान और न्यायपालिका से भी बड़ा समझती है, सो मनमुताबिक आचरण करती है। नकारात्मक चुके हुए लोग रतौंधी के शिकार हो चुके हैं, उन्हें विकास कार्य नजर ही नही आते, सबका साथ सबका विकास उन्हें केवल जुमला प्रतीत होता है, उन्हें मुफ्त राशन, मुफ्त की योजनाओं से दुर्बलों को दी जाने वाली सुविधाएं दिखती ही नही। उन्हें अपने घर में होने वाले अत्याचारों से कोई सरोकार नही है। भले ही पैरों तले से धरती खिसकती जा रही हो, मगर वे पुरानी दुकानों की लिपाई पुताई करवा के नए नाम से शोरूम खोलने में जुटे हैं। वे जानते हैं, कि लोकतंत्र में अपनी अपनी दुकानों को अकेले चलाना मुश्किल है, मिल बाँट कर खाने में ही भलाई है। कमाई के लिए मौसेरे भाई एकजुट रहकर अपने अस्तित्व की रक्षा भी कर सकते हैं और धंधे को बढ़ा भी सकते हैं। न्याय व्यवस्था के लंबित न्याय से उनको राहत मिल रही है और मिलती रहेगी। इस सत्य वे अवगत हैं, तभी तो उनकी स्वच्छंदता बदस्तूर जारी है। (विनायक फीचर्स)

कब मिलेगी हमें आज़ादी

पन्द्रह अगस्त को मिली आज़ादी
शहीदों के बलिदान से
अभी पानी हमें कई आज़ादी
भिड़ आँधी और तूफ़ान से

कब मिलेगी हमेंआज़ादी
देश के गद्दारों से
कब मिलेगी हमेंआज़ादी
आतंक के निर्मम साये से

कब मिलेगी हमेंआज़ादी
मिले खोखले नारों से
कब मिलेगी हमेंआज़ादी
अपने क्षुद्र स्वार्थों से

कब मिलेगी हमें आज़ादी
अंग्रेजी की गुलामी से
कब मिलेगी हमेंआज़ादी
पश्चिमी अंधानुकरण से

कब मिलेगी हमेंआज़ादी जाति धर्म
के झगड़ों से
कब मिलेगी हमें आज़ादी भाषा
प्रांत के रगड़ों से

कब मिलेगी हमेंआज़ादी
नित होते भ्रष्टाचारों से
कब मिलेगी हमेंआज़ादी
इस भाई भतीजेवाद से

कब मिलेगी बेटियों कोआज़ादी
असुरक्षित माहौल से
कब मिलेगी हमेंआज़ादी
ग़रीबी बेरोज़गारी से

कब मिलेगी हमेंआज़ादी
घर के ही जयचन्दों से
कब मिलेगी हमेंआज़ादी
इंसानियत के दुश्मनों से

पन्द्रह अगस्त को मिली आज़ादी
शहीदों के बलिदान से
अभी पानी हमें कई आज़ादी
भिड़ आँधी और तूफ़ान से

रहे मूक दर्शक तटस्थ यदि
अपराधी हैं हम सभी
सच्ची आज़ादी पाने को जो
जुटे नहीं जी जान सेङ्घ

ज्ञानवती सक्सेना/जयपुर
राजस्थान

चेतना

अनुरक्ति से अनासक्ति को
आत्मविभोर हो गढ़ता हूँ।
दैनंदिन नूतनदृष्टि होकर
परिदृश्य में सजता हूँ।
देख रहा हूँ चैतन्य को
जलते सूखे पत्तों में,
उगते सूरज में भोर सरीखा-
प्रतिदिन किंतु पलटता हूँ।।
कितनी बार हुआ हूँ धूसर
आंधी और तूफानो में।
खंड-खंड होकर बिखरा हूँ
भूतल के अनगिन
गहरे रेगिस्तानो में।
धरती के आलिंगन में
भर स्वत्व को-भाव
वि''ल हो तपता हूँ।।
कुछ निशान ज़रूरी हैं
गंतव्य दिखलाने को।
सत्य संज्ञान ज़रुरी है
मन्तव्य बतलाने को।
अनभिज्ञ प्रेम की
छवियों से नित
आतुरता में- मूरत
चित्त की रचता हूँ।।
नभ में बिखरे मृदु
कलरव के गायन को
जब अनहद में सुनता हूँ।
नदियों के बहके नर्तन को
मीठी ध्वनियों में गुनता हूँ।
देख क्षितिज के छोर सुनहरे
असीम से आ''दित
तन मन यह करता हूँ।।
प्रकाशित करने की
व्याकुलता में बिन उबे
हर पथ में दीपक धरता हूँ।
क्रिया-क्लाप सब कर
संरेखित दिशा प्रशस्त
सारथी बन करता हूँ।
आत्म प्रकाश का कर संचय
संधान लक्ष्य का करता हूँ।।

डॉ. कंचन मखीजा/रोहतक,
हरियाणा

तुम आईना हो मेरा

तुम आईना हो मेरा
जिसमें मैं अपना असली चेहरा
देखती हूँ –
कभी खुद को सँवार लेती हूँ,
तो कभी अपने ही वजूद पर मुस्कु
रा लेती हूँ।
न कोई दिखावा, न कोई परत –
बस एक सच्चा अक्स,
जो मुझे वैसे ही स्वीकार करता है
जैसी मैं हूँ – बिल्कुल निस्संकोच,
बिल्कुल सरल।
तुम्हारी मुस्कान में मेरी रौशनी है,
और तुम्हारी उदासी में
कभी-कभी मेरी साँसें भी थम
जाती हैं।
तुम्हें देखते ही लगता है –
जैसे खुद से ही गुफ़्तगू हो रही हो।
जैसे दिल के अंदर जो तूफ़ान थे,
उन्हें आखिरकार एक समझदार
गवाह मिल गया हो।
तुम वो आईना हो
जो न कभी टूटता है,
न मुझे टूटने देता है।
बल्कि हर बार,
जब मैं बिखरती हूँ –
तुम मुझे और भी सलीके से,
और भी संवर कर
मुझे वापस खुद से मिलवा देते हो।

रिया मनोज/जयपुर राजस्थान

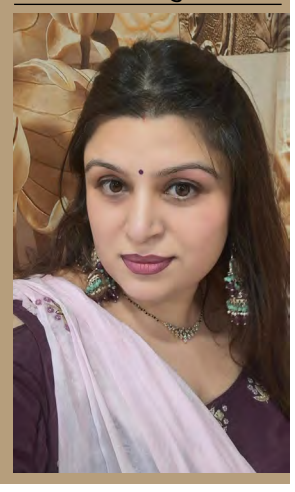

Editor/ proprietor - Raghubansh mani singh, Office Addresh-G4/9, New cable town Golmuri Jamshedpur Pin cod 81003 Purvi Singhbhum, Jharkhand, RNI(Title applied)
E-Paper for News portal www.newsdhamaka.com. All rights reserved by Editor Raghubansh Mani Singh. Any legal dispute will be filed at East Singhbhum juridiction only.

कप्तान शुभमन के दिलीप ट्रॉफी में खेलने से अच्छा संकेत जाएगा : गावस्कर

मुम्बई। महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने भारतीय टेस्ट टीम के कप्तान शुभमन गिल सहित कई अन्य खिलाड़ियों के घरेलू क्रिकेट में खेलने के फैसले की प्रशंसा की है। उन्होंने कहा है कि घरेलू क्रिकेट में शुभमन के खेलने से अन्य क्रिकेटरों को भी एक अच्छा संकेत जाएगा। गावस्कर ने बांग्लादेश दौरा स्थगित होने के बाद उसकी जगह टीम को श्रीलंका नहीं भेजने के क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के फैसले को भी सही कदम बताया है। श्रीलंकाई बोर्ड ने भारतीय टीम को दौरे पर भेजने का प्रस्ताव दिया था पर बोर्ड ने स्वीकार नहीं किया। गावस्कर ने लिखा, यह अच्छा है। बांग्लादेश का दौरा अगले साल तक के लिए स्थगित होने के बाद भी बीसीसीआई टीम को सफेद गेंद सीरीज के लिए इस महीने श्रीलंका भेजे जाने के लालच में नहीं आया। ऐसा करके बोर्ड ने घरेलू क्रिकेट को महत्व दिया है जो एक सकारात्मक बात है। अब अधिकतर बड़े खिलाड़ी दलीप ट्रॉफी टूर्नामेंट में खेलने के लिए उपलब्ध रहेंगे। इसमें शुभमन उत्तरी क्षेत्र की कप्तानी करेंगे। यह इस टूर्नामेंट के लिए बहुत अच्छा रहेगा। इस टूर्नामेंट के लिए उपलब्ध होकर कप्तान ने टीम के दूसरे सदस्यों को भी इसमें खेलने के स्पष्ट संकेत दे दिये हैं। दलीप ट्रॉफी इस महीने से शुरू हो रही है। इसके साथ ही इस साल के घरेलू सत्र की शुरुआत होगी। बीसीसीआई के नियमों के अनुसार जब जब कोई भी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट कार्यक्रम न हो और फिटनेस का मसला न हो तो सभी क्रिकेटरों को घरेलू क्रिकेट खेलना होगा।

वेस्टइंडीज ने पाकिस्तान को 203 रनों से दी करारी शिकस्त, खत्म किया 34 साल का इंतजार

एजेंसी, तरौबा

वेस्टइंडीज ने मंगलवार को पाकिस्तान को करारी शिकस्त देते हुए 34 साल बाद वनडे सीरीज अपने नाम कर ली। तीसरे और आखिरी वनडे में कैरेबियाई टीम ने 295 रन का लक्ष्य देकर मेहमानों को मात्र 92 रन पर समेट दिया और 203 रनों से जीत दर्ज की, जो पाकिस्तान के खिलाफ उनका अब तक का सबसे बड़ा वनडे अंतर है। इस जीत के नायक रहे तेज़ गेंदबाज़ जेडन सील्स, जिन्होंने 8.2 ओवर में 6 विकेट झटके। यह पुरुष वनडे क्रिकेट में किसी वेस्टइंडीज गेंदबाज़ के संयुक्त रूप से दूसरे सर्वश्रेष्ठ आंकड़े हैं। वहीं, कप्तान शाई होप ने नाबाद शतक (100*) जमाते हुए टीम को मुश्किल हालात से बाहर निकाला।

पहले बल्लेबाज़ी करते हुए वेस्टइंडीज ने शुरुआती 43 ओवर तक धीमी बल्लेबाज़ी की और 200 रन के पार नहीं पहुंच पाए थे। लेकिन 44वें ओवर में होप ने मोहम्मद नवाज़ को लगातार दो छक्के लगाकर रफ्तार पकड़ी। इसके बाद होप और जस्टिन ग्रीव्स ने अंतिम 7 ओवरों में 100 रन जोड़ते हुए स्कोर 294/5 तक पहुंचा दिया।

लक्ष्य का पीछा करने उतरी पाकिस्तान की शुरुआत बेहद खराब रही। सील्स ने पहले ओवर में सैम अयूब को आउट किया और फिर अब्दुल्ला शफीक को भी बिना खाता खोले पवेलियन भेजा। तीसरा झटका उन्होंने मोहम्मद रिज़वान को दिया, जिनकी ऑफ बेल गेंद से हल्के से छूकर गिर गई। इसके बाद उन्होंने बाबर आज़म को एलबीडब्ल्यू कर पाकिस्तान को 23/4 पर ला दिया। बाकी बल्लेबाज़ों में कोई भी टिककर नहीं खेल पाया। सलमान अली आगा और हसन नवाज़ ने कुछ समय जरूर बिताया, लेकिन रनगति लगातार बढ़ती रही। गुडाकेश मोती और रोस्टन चेज़ ने बीच के ओवरों में दबाव बनाए रखा। अंततः सील्स ने नसीम शाह और हसन अली को भी चलता किया, जबकि आखिरी रन आउट के साथ पाकिस्तान की पारी 92 पर सिमट गई। इस जीत के साथ वेस्टइंडीज ने न केवल सीरीज 2-1 से जीती, बल्कि तीन दशकों से भी अधिक समय बाद पाकिस्तान के खिलाफ वनडे सीरीज जीतने का सूखा खत्म कर दिया।

पटेल रिटेल लिमिटेड का आईपीओ 19 अगस्त को खुलेगा, प्राइस बैंड 237-255 रुपये प्रति शेयर

मुंबई/नई दिल्ली। सुपरमार्केट श्रृंखला पटेल रिटेल लिमिटेड का आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) निवेशकों के लिए 19 अगस्त को खुलकर 21 अगस्त को बंद होगा। इस आईपीओ के लिए कंपनी ने मूल्य का दायरा (प्राइस बैंड) 237-255 रुपये प्रति शेयर तय किया गया है। कंपनी ने जारी एक बयान में बताया कि निवेशक इसमें 21 अगस्त तक बोली लगा सकते हैं। वहीं, बड़े (एंकर) निवेशकों के लिए बोली की लगाने की प्रक्रिया 18 अगस्त को होगी। इसके लिए मूल?य का दायरा (प्राइस बैंड) 237-255 रुपये प्रति शेयर तय किया है। निवेशक कम से कम 58 इक्विटी शेयर के लिए बोली लगा सकते हैं, और इसके बाद 58 के मल्टीपल में बोली लगाई जा सकती है। पटेल रिटेल लिमिटेड के 10 रुपये फेस वैल्यू वाले इस आईपीओ के तहत 85.18 लाख नए शेयर और प्रवर्तकों के 10.02 लाख शेयरों की बिक्री होगी। प्रमोटर सेलिंग शेयरहोल्डर्स ये शेयर बेचेंगे। इसमें पात्र कर्मचारियों के लिए रिजर्वेशन भी शामिल है। इसमें कर्मचारियों को आईपीओ में 20 रुपये प्रति शेयर की छूट दी जाएगी। कंपनी आईपीओ से जुटाए पैसों में से 59 करोड़ रुपये तक का इस्तेमाल पटेल रिटेल लिमिटेड के कुछ कर्जों का पूरा या आंशिक भुगतान/पूर्व-भुगतान के लिए करेगी।

बैंक बचत खातों में न्यूनतम शेष राशि तय करने के लिए स्वतंत्र : आरबीआई गवर्नर

नई दिल्ली/मेहसाणा। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने कहा कि बैंक बचत खातों में न्यूनतम शेष राशि तय करने के लिए स्वतंत्र हैं। मल्होत्रा ने कहा कि यह आरबीआई के नियामक अधिकार क्षेत्र में नहीं आता है। आरबीआई के गवर्नर ने गुजरात के मेहसाणा जिले की गोजरिया ग्राम पंचायत में आयोजित वित्तीय समावेशन संतृप्ति अभियानपर एक समारोह में पत्रकारों से चर्चा के दौरान यह बात कही। मल्होत्रा ने एक निजी क्षेत्र के बैंक की ओर से बचत खातों के लिए आवश्यक न्यूनतम शेष राशि बढ़ाने के बारे में पूछे जाने पर कहा, आरबीआई ने यह निर्णय प्रत्येक बैंक पर छोड़ दिया है कि वे कितना न्यूनतम शेष निर्धारित करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि कुछ बैंकों ने बचत खातों के लिए 10,000 रुपये न्यूनतम शेष राशि रखा है, जबकि कुछ ने 2,000 रुपये रखा है। वहीं, कुछ बैंकों ने (ग्राहकों को) इसकी छूट दी है। आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने कहा कि यह (आरबीआई के) नियामक क्षेत्राधिकार में नहीं है। इससे पहले बैंकिंग हितधारकों की पैरोकारी करने वाली एक नागरिक संस्था ने वित्त मंत्रालय को पत्र लिखकर आईसीआईसीआई बैंक के बचत खातों में न्यूनतम जमा राशि बढ़ाने का विरोध किया था। नागरिक संस्था बैंक बचाओ देश बचाओ मंच ने वित्त मंत्री को लिखे पत्र में आईसीआईसीआई बैंक के इस फैसले में हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया है। निजी क्षेत्र के आईसीआईसीआई बैंक ने हाल ही में 1 अगस्त से खोले जाने वाले नए बचत खातों के लिए न्यूनतम शेष राशि की आवश्यकता को पांच गुना बढ़ा दिया था।

अडानी डिफेंस एमआरओ सेवा प्रदाता इडैमर टेक्निक्स का करेगी अधिग्रहण

अहमदाबाद। अडानी डिफेंस सिस्टम्स एंड टेक्नोलॉजीज लिमिटेड (एडीएसटीएल) ने निजी क्षेत्र की एमआरओ (रखरखाव, मरम्मत और ओवरहालिंग) सेवा प्रदाता कंपनी इंडैमर टेक्निक्स प्राइवेट लिमिटेड (आईटीपीएल) में शत-प्रतिशत हिस्सेदारी हासिल करने के लिए एक निर्णायक समझौता किया है। अडानी डिफेंस ने बताया कि उसने अपनी इकाई होराइजन एयरो सॉल्यूशंस लिमिटेड के माध्यम से और प्राइम एयरो सर्विसेज एलएलपी के साथ साझेदारी में यह समझौता किया है। होराइजन अभी अडानी डिफेंस और इंडैमर टेक्निक्स के निदेशक प्रजय पटेल के स्वामित्व वाली कंपनी प्राइम एयरो के बीच 50-50 की साझेदारी वाला संयुक्त उद्यम है। नागपुर में मिहान विशेष आर्थिक क्षेत्र (सेज) में रणनीतिक रूप से स्थित आईटीपीएल ने 30 एकड़ की भूमि पर एक अत्याधुनिक ग्रीनफील्ड सुविधा स्थापित की है। इस सुविधा में 10 हैंगरों में 15 विमान के रखने की क्षमता है। आईटीपीएल को भारत के विमानन नियामक डीजीसीए, अमेरिकी नियामक एफएए और अन्य वैश्विक नागरिक उड्डयन नियामकों द्वारा अनुमोदित किया गया है। कंपनी प्रमुख भारतीय और वैश्विक ग्राहकों को लीज़ रिटर्न चेक, हेवी सी-चेक, स्ट्रक्चरल रिपेयर और एयरक्राफ्ट पेंटिंग सहित एमआरओ सेवाओं की एक व्यापक श्रृंखला प्रदान करती है।

सोने पर टैरिफ को लेकर ट्रंप ने अटकलों पर लगाया विराम, दिया बड़ा बयान

वाशिंगटन। सोने पर संभावित टैरिफ को लेकर चल रही अटकलों पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने विराम लगा दिया है। उन्होंने एक बयान जारी कर स्पष्ट किया कि उनकी सरकार का फिलहाल सोने पर टैरिफ लगाने का कोई इरादा नहीं है। यह बयान ऐसे समय में आया है जब कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में यह दावा किया जा रहा था कि सरकार चीन से आने वाले सोने पर भारी शुल्क लगाने की योजना बना रही है। इस खबर के बाद सोने के वैश्विक बाजार में कुछ उतार-चढ़ाव देखा गया था, लेकिन ट्रंप के इस स्पष्टीकरण से बाजार में स्थिरता आने की उम्मीद है। ट्रंप ने कहा कि सोने को एक सुरक्षित निवेश के रूप में देखा जाता है और वह इस बाजार को किसी भी तरह से प्रभावित नहीं करना चाहते हैं। उनका यह बयान निवेशकों और बाजार विशेषज्ञों के लिए एक बड़ी राहत लेकर आया है।

संसद ने मणिपुर बजट और राज्य जीएसटी संशोधन विधेयक को दी मंजूरी

एजेंसी

नई दिल्ली। संसद ने मणिपुर बजट तथा मणिपुर वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) संशोधन विधेयक, 2025 को अपनी मंजूरी दे दी। राज्यसभा ने मणिपुर के बजट और संबंधित (संख्या 2) विधेयक, 2025 तथा मणिपुर जीएसटी (संशोधन) विधेयक, 2025 पर संयुक्त चर्चा और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के जवाब के बाद इन्हें लोकसभा को लौटा दिया दिया। लोकसभा इन्हें पिछले हफ्ते पहले ही पारित कर चुकी है।केंद्रीय वित्त मंत्री ने राज?यसभा में इन विधेयकों पर हुई चर्चा का जवाब देते हुए कहा कि मणिपुर, उसका बजट, उसका कर राजस्व, जीएसटी में उसकी भागीदारी राज्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। सीतारमण ने कहा कि पहले राज्य के लिए लेखा अनुदान लाया गया था, लेकिन यह पूर्ण बजट है। वित्त मंत्री ने कहा कि विपक्ष ने पहले मणिपुर के मामले में बहुत रुचि दिखाई थी, सरकार द्वारा मणिपुर के लिए 2898 करोड़ रुपये का बजट बनाया गया है। इसमें से 1667 करोड़ रुपये पूंजीगत खाते में व्यय होंगे, जिसका अर्थ है

लेकिन आज जब मणिपुर के लोगों को उनका पैसा मिलने जा रहा है, तो उन्हें (विपक्ष को) इसकी अनुमति देनी चाहिए। उन्होंने विपक्ष के सदस्यों से चर्चा में भाग लेने को कहा। सीतारमण ने कहा कि केंद्र कि परिसंपत्तियों का निर्माण होगा और रोजगार का सृजन होगा, जिसके परिणामस्वरूप राज्य की अर्थव्यवस्था पटरी पर आएगी। सीतारमण ने कहा कि 1231 करोड़ रुपये राजस्व सहायता पर व्यय किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि इसके तहत आंतरिक रूप से विस्थापित लोगों के पुनर्वास में जो तत्काल जरूरतें हैं, उनको पूरा करने के लिए 523 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इससे पहले केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी ने मणिपुर वस्तु एवं सेवा कर (संशोधन) विधेयक, 2025 और मणिपुर विनियोग (संख्या 2) विधेयक, 2025 दोनों विधेयकों को एक साथ राज्यसभा में विचारार्थ और वापसी के लिए प्रस्तुत किया। इसके साथ ही उन्होंने बजट (मणिपुर), 2025-26 को भी चर्चा के लिए प्रस्तुत किया। राज्यसभा ने इन विधेयकों मणिपुर विनियोग (संख्या 2) विधेयक, 2025 और मणिपुर माल एवं सेवा कर (संशोधन) विधेयक, 2025 लौटा दिया।

निर्मला सीतारमण ने लोकसभा में संशोधित आयकर विधेयक, 2025 पेश किया

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने लोकसभा में नए आयकर विधेयक, 2025 का संशोधित संस्करण पेश किया। इस विधेयक में बैजयंत पांडा की अध्यक्षता वाली प्रवर समिति की अधिकांश सिफारिशें शामिल हैं, जो मौजूदा आयकर अधिनियम, 1961 को प्रतिस्थापित करेगा। दरअसल, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने नए आयकर विधेयक, 2025 को वापस ले लिया था, जिसे 13 फरवरी को लोकसभा में मौजूदा आयकर अधिनियम, 1961 के स्थान पर वित्त मंत्री ने पेश किया था। संशोधित आयकर विधेयक, 2025 में भाजपा सांसद बैजयंत जय पांडा की अध्यक्षता वाली प्रवर समिति की अधिकांश सिफारिशों को शामिल किया गया हैं। प्रवर समिति ने आयकर विधेयक के लिए 285 सुझाव दिए थे। आयकर विधेयक, 2025 को भारत की कराधान प्रणाली को अद्यतन और सरल बनाने के लिए डिजाइन किया गया है, जो 60 वर्षों से अधिक समय से लागू

कानूनों की जगह लेगा। इसमें एक संशोधित संरचना, डिजिटल कराधान के प्रावधान, विवादों के समाधान की प्रणालियां और तकनीकी एवं डेटा-संचालित तरीकों के जरिए कर संग्रह का विस्तार करने की पहल शामिल है।

हाइवे इंफ्रास्ट्रक्चर की स्टॉक मार्केट में जोरदार एंट्री, मजबूत लिस्टिंग के बाद लगा अपर सर्किट

एजेंसी

नई दिल्ली। इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट और मैनेजमेंट कंपनी हाइवे इंफ्रास्ट्रक्चर के शेयरों ने आज स्टॉक मार्केट में जोरदार एंट्री करके अपने आईपीओ निवेशकों को खुश कर दिया। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 70 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज बीएसई पर इसकी लिस्टिंग 117 रुपये के स्तर पर और एनएसई पर 115 रुपये के स्तर पर हुई। इस तरह स्टॉक मार्केट में एंट्री करने के साथ ही कंपनी के आईपीओ निवेशकों को करीब 67 प्रतिशत का लिस्टिंग गेन मिल गया। लिस्टिंग के बाद लिवाली शुरू हो जाने के कारण कुछ ही देर में कंपनी के शेयर उछल कर 122.84 रुपये के अपर सर्किट लेवल पर पहुंच गए। इस तरह पहले दिन के कारोबार में ही कंपनी के आईपीओ निवेशकों को 75 प्रतिशत से अधिक का मुनाफ हो चुका है। हाइवे इंफ्रास्ट्रक्चर का 130 करोड़ रुपये का आईपीओ 5

से 7 अगस्त के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से जबरदस्त रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 316.64 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इनमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए रिजर्व पोर्शन 432.71 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इसी तरह नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) के लिए रिजर्व पोर्शन में 473.10 गुना सब्सक्रिप्शन आया था। इसके अलावा रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन 164.48 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इस आईपीओ के तहत 97.52 करोड़ रुपये के नए शेयर जारी किए गए हैं। इसके अलावा 5 रुपये फेस वैल्यू वाले 46.40 लाख शेयर ऑफर फॉर सेल विंडो के जरिये बेचे गए हैं। आईपीओ के जरिये जुटाए गए पैसे का इस्तेमाल कंपनी अपनी वर्किंग कैपिटल की जरूरतों को पूरा करने और आम कॉरपोरेट उद्देश्यों में करेगी। कंपनी की वित्तीय स्थिति की बात करें तो प्रॉस्पेक्टस में किए गए दावे के मुताबिक इसकी वित्तीय सेहत लगातार मजबूत हुई है।

लोकसभा ने नए आयकर विधेयक को किया पारित

एजेंसी

नई दिल्ली। लोकसभा ने संशोधित नया आयकर विधेयक- 2025 और कराधान विधियां (संशोधन) विधेयक-2025 को पारित कर दिया है। केंद्रीय वित?त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इसका संशोधित संस्करण पेश किया, जिसके तुरंत बाद आयकर (संख्या 2) विधेयक, 2025 को अपनी मंजूरी दे दी गई। ये विधेयक मौजूदा 1961 आयकर अधिनियम का स्थान लेने वाला है। यह विधेयक अब राष्ट्रपति की स्वीकृति प्राप्त करने से पहले राज्यसभा में जाएगा। यह नया आयकर कानून 1 अप्रैल, 2026 से प्रभावी होगा। आइए जानते हैं इसके कानून बन जाने से करदाताओं को क्या-क्या लाभ होगा। वित्त मंत्री ने भाजपा सांसद बैजयंत पांडा की अध्यक्षता वाली प्रवर समिति की करीब सभी सिफारिशों को शामिल करने के बाद संशोधित आयकर विधेयक- 2025 पेश किया। इस विधेयक का मुख्य उद्देश्य आयकर अधिनियम, 1961 के तहत कानूनों को समेकित और संशोधित करना है। इसके साथ ही लोकसभा ने कराधान विधि (संशोधन) विधेयक- 2025 को पारित कर दिया है, जिससे एकीकृत पेंशन योजना के अंशदाताओं को कर छूट प्रदान करने के लिए आयकर अधिनियम, 1961 और वित्त अधिनियम, 2025 में संशोधन का रास्ता आसान होगा।लोकसभा में पारित संशोधित नए आयकर विधेयक, 2025 के उद्देश्यों और कारणों के विवरण में कहा गया है, प्रवर समिति की लगभग सभी सिफारिशों को सरकार ने स्वीकार कर लिया है। इसके अतिरिक्त हितधारकों से ऐसे बदलावों के बारे में सुझाव प्राप्त हुए हैं जो प्रस्तावित कानूनी अर्थ को और अधिक सटीक रूप से व्यक्त करेंगे। इसमें पुराने आयकर अधिनियम, 1961 को प्रतिस्थापित किया जाएगा, जिससे कर कानून को समेकित और सरल बनाया जाएगा। इसमें 23 अध्यायों में 536 धाराएं भी होंगी, जो 800 से अधिक धाराओं से एक महत्वपूर्ण कमी है। इस कानून में स्पष्टता में सुधार, प्रारूपण में सुधार, वाक्यांशों को संरेखित करने और परस्पर संदर्भों को बेहतर बनाने के लिए प्रवर समिति की 285 सिफ़ारिशें (32 प्रमुख परिवर्तनों सहित) शामिल हैं। मानव हस्तक्षेप को कम करने, पारदर्शिता बढ़ाने और भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए मूल्यांकन और अनुपालन प्रक्रियाएं फेसलेस और डिजिटल-प्रथम होंगी। कर अधिकारियों को कार्रवाई करने से पहले पूर्व सूचना जारी करनी होगी व प्रतिक्रियाओं पर विचार करना होगा। बिना किसी जुर्माने के आईटीआर की समय सीमा के बाद भी टीडीएस रिफंड की अनुमति देता है और गैर-देय करदाताओं के लिए अग्रिम शून्य-टीडीएस प्रमाणपत्रों का प्रावधान करता है। गृह संपत्ति आयः अब धाराएं स्पष्ट करती हैं कि नगरपालिका करों में कटौती के बाद 30 फीसदी की मानक कटौती लागू होती है और किराए पर दी गई संपत्तियों के लिए निर्माण-पूर्व ब्याज की अनुमति है, पांच वर्षों में ब्याज की अनुमति है। इसके अलावा परिवर्तित पेंशन (एलआईसी पेंशन फंड या एनपीएस जैसी विशिष्ट पेंशन योजनाओं से एकमुश्त भुगतान): अब पूरी तरह से कर-कटौती योग्य, पिछली अस्पष्टताओं का समाधान शामिल है।

बीएसएनएल ने 5जी और डिजिटल तकनीकों में कौशल विकास के लिए वैश्विक कंपनियों से समझौता किया

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत संचार निगम लिमिटेड (बीएसएनएल) ने चार वैश्विक तकनीकी कंपनियों एरिक्सन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, क्वालकॉम टेक्नोलॉजीज इंक., सिस्को सिस्टम्स और नोकिया सॉल्यूशंस एंड नेटवर्क्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के साथ समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। यह कार्यक्रम केंद्रीय संचार एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की उपस्थिति में आयोजित हुआ।

इन समझौतों का उद्देश्य भारत के डिजिटल परिवर्तन को तेज करना और कौशल विकास तंत्र को मजबूत बनाना है। इसके तहत बीएसएनएल के जबलपुर स्थित शीर्ष प्रशिक्षण संस्थान, भारत रत्न भीमराव आंबेडकर इंस्टीट्यूट ऑफ टेलीकॉम ट्रेनिंग (बीआरबीआरएआईटीटी) में

5जी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता/मशीन लर्निंग, नेटवर्किंग और डिजिटल तकनीकों में उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए जाएंगे।

यह पहल दूरसंचार विभाग (डीओटी) की उस व्यापक योजना का हिस्सा है, जिसके तहत बीआरबीआरएआईटीटी में टेलीकॉम इनोवेशन, रिसर्च एंड ट्रेनिंग सेंटर (टीआईआरटीसी) स्थापित किया जाएगा। इसे उद्योग-नेतृत्व वाले राष्ट्रीय केंद्र के रूप में विकसित किया जाएगा, जो दूरसंचार क्षेत्र में अनुसंधान, नवाचार और भविष्य के लिए तैयार कार्यबल के निर्माण पर केंद्रित होगा। यह केंद्र प्रधानमंत्री के 'स्किल इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' के दृष्टिकोण के अनुरूप होगा। नई दिल्ली में आयोजित समारोह में मध्य प्रदेश के लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह, दूरसंचार सचिव डॉ. नीरज मित्तल, बीएसएनएल के वरिष्ठ अधिकारी और भागीदार कंपनियों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। समझौते पर बीएसएनएल के प्रबंध निदेशक ए. रॉबर्ट जे. रावी ने हस्ताक्षर किए। उनके साथ नोकिया इंडिया के कंट्री हेड तरुण छाबड़ा, सिस्को के एमडी हरीश कृष्णन, एरिक्सन इंडिया के एमडी नितिन बंसल और क्वालकॉम इंडिया के अध्यक्ष सवी सोनी शामिल थे।

खान एवं खनिज (विकास एवं विनियमन) संशोधन विधेयक लोकसभा में पेश

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी. किशन रेड्डी ने लोकसभा में खान एवं खनिज (विकास एवं विनियमन) संशोधन विधेयक, 2025 पेश किया। मंत्री रेड्डी ने विधेयक पेश करते हुए कहा कि यह विधेयक खान एवं खनिज (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 1957 में संशोधन करेगा।

संसद में पेश खनन कानूनों में संशोधन विधेयक का मुख्य उद्देश्य विदेशों में महत्वपूर्ण खनिज परिसंपत्तियों के अधिग्रहण के लिए राज्य वित्त पोषण को सक्षम बनाना है। सरकार का लक्ष्य इसके जरिए लिथियम, तांबा, कोबाल्ट और दुर्लभ मृदा तत्वों सहित बेहद जरूरी खनिजों की निरंतर और बेहतर आपूर्ति सुनिश्चित करना है, जो परमाणु ऊर्जा, नवीकरणीय ऊर्जा, अंतरिक्ष, रक्षा, दूरसंचार और उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण हैं। अभी इन खनिजों की आपूर्ति श्रृंखला पर मुख्य रूप से चीन का प्रभुत्व है।

घर पर ही करें मेनीक्योर-पैडीक्योर

चेहरे के साथ-साथ शरीर की साफ-सफाई रखना भी बहुत जरूरी है। खासकर हाथ-पैर की। हाथ-पैर की त्वचा, कोमल और साफ-सुथरा बनाए रखने के लिए समय- समय पर मेनीक्योर और पैडीक्योर करवाना चाहिए लेकिन बिजी शैड्यूल के चलते पार्लर जाने का समय नहीं मिलता। वैसे भी महंगाई के जमाने में पार्लर जाना काफी महंगा पड़ता है। ऐसे में चिंता करने की जरूरत नहीं आप घर पर ही मेनीक्योर-पैडीक्योर कर हाथों-पैरों को खूबसूरत बना सकते हैं। इसमें आपका ज्यादा खर्चा भी नहीं आएगा।

हाथ-पैर की सफाई के आसान टिप्स

गर्म पानी में थोड़ा सा नमक डालकर हाथ-पैर डुबोने से भी उनकी अच्छी से सफाई हो जाती है लेकिन डेड स्किन को निकालने के लिए उसमें स्क्रबिंग, लोशन और क्रीम की जरूरत पड़ती है।

- नींबू के रस में गुलाब जल मिलाकर हाथों पर लेप लगा सकते हैं। इससे हाथ की त्वचा मुलायम होगी।

-चीनी और तेल को स्क्रबर के तौर पर इस्तेमाल करें। इससे हाथ-पैर की त्वचा मुलायम हो जाएगी। मेनीक्योर के बाद मॉइश्चराइजर जरूर लगाएं। घर से बाहर जाने से 20 मिनट पहले हाथों पर भी सनस्क्रीन लोशन लगाएं।

- 1 चम्मच शहद, 1 अंडे (पीले भाग के बिना) और 1 चम्मच ग्लिसरीन मिलाकर हाथ-पैरों में लगाएं। फिर 10 मिनट बाद गुनगुने पानी से हाथ पैर धो लें।

-गर्म पानी में नमक, मेडिकेटेड हैंडवॉश और ग्लिसरीन डालकर पैरों को 20 मिनट तक उसमें डुबो कर रखें। उसके बाद फुट स्मूदर और मसाजर से एड़ियों को अच्छे से रगड़ें। अच्छी तरह स्क्रब करने के बाद उन पर फुट क्रीम लगाएं और पैरों पर पतला पॉलिथिन चढ़ाकर जुराबे पहनें।

- गर्म पानी में आधा चम्मच हाइड्रोजन पैरोक्साइड डालें और 5-6 मिनट तक पैरों को डूबोकर रखें। फुट स्क्रब क्रीम से 5 मिनट स्क्रबिग करें। बाद में पैर धोकर पोंछ लें। बाद में कोल्ड क्रीम लगाकर 3 से 5 मिनट मालिश करें।

-नाखूनों साफ करने के लिए नेल ब्रश का इस्तेमाल करें और शेप देने के लिए फाइलर और नेल कटर की मदद लें। याद रखें ये बात मेनिक्योर-पैडीक्योर से हाथ और पैर की त्वचा मुलायम होती है और सारी गंदगी निकल जाती है लेकिन ध्यान रहें कि मेनिक्योर निश्चित अवधि में ही करवाया जाए। ज्यादा मेनिक्योर-पैडीक्योर करवाने से भी हाथ-पैर की प्राकृतिक चमक-दमक गायब हो जाती है।

गर्दन का कालापन

दूर करने के लिए घरेलू उपचार

चेहरे की खुबसूरती के साथ-साथ गर्दन का सुन्दर होना भी बहुत ज़रूरी है। लोग इस पर ध्यान नहीं देते। ज़्यादातर इसे नजंर अंदाज किया जाता है। गर्मियों में गर्दन का कालापन, सन टैनिंग या सनबर्न आम समस्या है। इसलिए आज हम आपको गर्दन का कालापन दूर करने के लिए कुछ घरेलू उपचारों के बारे में बताएगें। तो आइए जानते हैं ये घरेलू उपचार.....

- नींबू और गुलाबजल रात को सोने से पहलें आप घर पर नींबू का रस और गुलाबजल मिला कर रूई की मदद से गर्दन पर लगा कर छोड़ दें। सुबह होते ही इसे साफ पानी से धो लें।

- शहद नींबू और शुद्ध शहद को एक समान मिला कर 20-25 मिनट तक गर्दन पर लगा कर छोड़ दें। बाद में पानी से साफ कर लें और देखे कि गर्दन का कालापन कुछ हद तक साफ हो जाएगा।

- हल्दी पावडर चुटकी भर हल्दी को 1 चम्मच नींबू के रस में मिला कर 20 मिनट तक लगाएं। जब यह सूख जाए तो पानी से साफ कर लें।

- टमाटर

गर्दन का कालापन दूर करने के लिए टमाटर और नींबू के रस को समान मात्रा में मिला कर दिन में दो बार गर्दन पर लगाएं। बाद में पानी से साफ कर दें।

- जैतून तेल और शहद

गर्दन की डेड स्किन को हटाने के लिए और त्वचा में नमी बनाए रखने के लिए थोड़ा सा नींबू का रस, जैतून के तेल की कुछ बूंदें और 1 चम्मच शहद को मिला कर 30 मिनट लग लगा कर रखें और मसाज करें। मसाज करने के बाद पानी से साफ कर लें।

ट्रंप टैरिफ और अमेरिका में बसे विदेशी मूल के नागरिकों की भूमिका

(विवेक रंजन श्रीवास्तव -विनायक फीचर्स)

अमेरिका में मूल अमेरिकी नागरिक संख्या में सीमित हैं। वहां बड़ी संख्या में विदेशों से आकर बस गए लोगों की जनसंख्या है। अपनी मूल मिट्टी से,भले ही पीढ़ियों पहले वह छूट चुकी हो मनुष्य के संबंध समाप्त नहीं होते । कमला हैरिस , ऋषि सुनक, सुंदर पिचाई आदि हस्तियों से भारतीय इसी आधार पर अपनी आत्मीयता जताते हैं जबकि ये सब अब पूरी तरह अमेरिकी नागरिक हैं।

आज अमेरिका में राष्ट्रपति ट्रंप टैरिफ के जरिए अमेरिका को फिर से महान बनाने के विचित्र रास्ते पर चल पड़े हैं । ऐसे में भारतीय, चीनी , या ब्राजील के मूल नागरिकों की जो अब वहां अमेरिकन नागरिक हैं , क्या भूमिका हो सकती है? अमेरिकन लोगों पर इस परिदृश्य का क्या असर होगा, यह समय बताएगा ।

अमेरिकी टैरिफ का असर सुनते ही सबसे पहले जेब अपनी भाषा में बोलने लगती है, फिर बाजार अपनी चाल चलता है और अंत में राजनीति यह तर्क देती है कि यह सब अमेरिकन घरेलू उत्पादन बचाने के लिए है। किंतु अतीत और वर्तमान के शोध बताते हैं कि आयात शुल्क का बोझ अंततः उपभोक्ता पर ही आता है। 2018 की टैरिफ लहर में यह साफ देखा गया था कि शुल्क का लगभग पूरा भार अमेरिकी आयातकों और उपभोक्ताओं पर पड़ा, दाम बढ़े, विकल्प घटे और वास्तविक आय में कमी आई।

तब वॉशिंग मशीनों पर अमेरिकन शुल्क का परिणाम यह हुआ कि दुकानों में वॉशिंग मशीन और उनके साथ चलने वाले ड्रायर दोनों की कीमत औसतन बारह प्रतिशत बढ़ गई। यह सिर्फ एक उदाहरण है, व्यापक अध्ययन दिखाते हैं कि टैरिफ का असर सीधे आयात कीमतों पर पड़ता है और उपभोक्ता की भलाई घटती है।

हाल ही में अमेरिका ने चीन से आने वाले इलेक्ट्रिक वाहन, उन्नत बैटरियां, सोलर सेल, स्टील, एल्युमिनियम और कुछ चिकित्सकीय उपकरणों पर भारी शुल्क लगाए। बैटरी और कुछ महत्वपूर्ण खनिजों पर दरें पच्चीस प्रतिशत तक कर दी गईं। इस कारण औसत प्रभावी टैरिफ दर 1930 के दशक के बाद सबसे ऊंचे स्तरों पर पहुंच गई है। इसका सीधा अर्थ है कि जिन वस्तुओं के विकल्प तुरंत और सस्ते में उपलब्ध नहीं हैं, उनकी कमी और महंगाई दोनों की संभावना बढ़ जाती है। इसका एक और परिणाम यह होता है कि सामने वाले देश भी जवाबी कार्रवाई करते हैं और सबसे पहले चोट लगती है अमेरिकी कृषि तथा उद्योग पर। पिछली बार के टकराव में अमेरिकी कृषि निर्यात को सत्ताईस अरब डॉलर से अधिक का सीधा नुकसान हुआ

था। किसानों की आय में दस से बीस प्रतिशत तक की गिरावट दर्ज हुई और कई निर्यात बाजार हमेशा के लिए खो गए। जहां विकल्प आपूर्ति संभव है, वहां वस्तुओं की कमी नहीं होती किंतु वे महंगी होकर मिलती हैं क्योंकि नए सप्लायर महंगे पड़ते हैं और घरेलू कंपनियां भी प्रतिस्पर्धा घटने पर दाम बढ़ा देती हैं। पर जहां आपूर्ति जटिल है, जैसे ईवी बैटरी, सोलर वैल्यू चेन या विशेष मेडिकल उपकरण, वहां कमी और कीमत में उछाल दोनों एक साथ देखने को मिलते हैं।

ऐसी परिस्थितियों में वर्तमान ट्रंप टैरिफ वार में भारतीय मूल के उन अमेरिकी नागरिकों की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है जिन्होंने वर्षों पहले वहां की नागरिकता ग्रहण की है। लगभग पचपन लाख की संख्या वाला यह समुदाय उच्च औसत आय, तकनीकी दक्षता और उद्यमशीलता के लिए प्रसिद्ध है। इसी वर्ग के वोटर को प्रभावित करने हेतु ट्रंप ने हाउडी मोदी शो आयोजित किया था। भारतीयों में देश के प्रति आत्मीयता का यह भाव नैसर्गिक होता है। टेक्नोलॉजी, स्वास्थ्य, खुदरा व्यापार और आपूर्ति चेन जैसे क्षेत्रों में भारतीयों की अमेरिका में गहरी उपस्थिति है। यह समुदाय आपूर्ति के नए मार्ग बनाने, उत्पादों के स्थानीय विकल्प विकसित करने और नीति संवाद में सक्रिय होकर टैरिफ के प्रभाव को संतुलित कर सकता है।

भारतीय मूल के उद्यमी मित्र-रीशोरिंग के माध्यम से भारत, वियतनाम और मेक्सिको जैसे देशों से आपूर्ति बढ़ाने में मदद कर सकते हैं। वे उत्पाद डिज़ाइन में बदलाव लाकर आयातित घटकों पर निर्भरता कम कर सकते हैं। इनके पास भाषा, विश्वास और नियामकीय समझ का ऐसा संयोजन है जो व्यापारिक बदलाव को गति दे सकता है।

इसी तरह चीनी मूल के अमेरिकी नागरिक भी चार से पांच मिलियन की संख्या में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। वे वैज्ञानिक, चिकित्सा, लॉजिस्टिक्स और व्यापार जगत में अग्रणी स्थान रखते हैं। वे वैकल्पिक आपूर्ति का निर्माण, डेटा-आधारित नीति संवाद और संयुक्त उद्यमों को अमेरिकी नियमों के अनुरूप ढालने में सहयोग कर सकते हैं। हालांकि भू-राजनीतिक तनाव के समय उनके लिए सामाजिक दबाव और संदेह का माहौल चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

ब्राज़ील मूल के अमेरिकियों की संख्या अपेक्षाकृत कम, लगभग पांच लाख है, किंतु कृषि, खाद्य प्रसंस्करण और ई-कॉमर्स जैसे क्षेत्रों में उनका योगदान उल्लेखनीय है। स्टील और एल्युमिनियम के व्यापार में भले ही तनाव रहा हो, पर दक्षिण अमेरिका से विविध आपूर्ति और मूल्य स्थिरता बनाए रखने में वे सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं।

इस सब में इन अमेरिकन नागरिकों के उनके मूल देश से जुड़े प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

कुल मिलाकर, टैरिफ बढ़ने का असर उपभोक्ता मूल्य सूचकांक पर दबाव, घरेलू कंपनियों द्वारा कीमतें बढ़ाने और निर्यात में कमी के रूप में सामने आता है। जवाबी टैरिफ से कृषि और विनिर्माण दोनों पर चोट लगती है और अंततः करदाता को राहत पैकेज का बोझ उठाना पड़ता है।

इस पृष्ठभूमि में भारतीय, चीनी और ब्राज़ीलियाई मूल के अमेरिकी नागरिक तीन स्तरों पर निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं,उपभोक्ता के रूप में सजगता और सामूहिक सौदेबाजी, उद्यमी के रूप में वैकल्पिक सोर्सिंग और नवाचार, तथा नागरिक के रूप में तथ्यों पर आधारित नीति बहस। प्रवासी समुदायों की ऊर्जा, ज्ञान और नेटवर्क टैरिफ के झटकों को सहन करने योग्य बना सकते हैं। सवाल यह नहीं है कि टैरिफ रहेंगे या नहीं, सवाल यह है कि उन्हें कितनी बुद्धिमानी से साधा जाएगा ताकि दोनों देशों में घरेलू सुरक्षा भी बनी रहे, प्रतिस्पर्धा भी कम न हो और आम उपभोक्ता की थाली व थैले पर अनावश्यक भार न पड़े।

(विनायक फीचर्स)

सौंदर्य में निखारने पाने के लिए इस्तेमाल में लाए यह साबुन

आजकल ऐलोवेरा का ज्यादातर इस्तेमाल सौंदर्य को बरकरार रखने के लिए किया जाता है। ऐलोवेरा प्रकृति का वरदान है। यह रूखी, बेजान, दागदार त्वचा के साथ-साथ मुंहासों, सोरायसिस आदि त्वचा की समस्या को दूर करने में भी मदद करता है। इसके रस को चेहरे पर लगाने से त्वचा में चमक आती है। कई बार त्वचा के जलने पर और त्वचा का कालापन दूर करने के लिए भी एलोवेरा का रस लगाया जाता है। सौंदर्य में निखार पाने के लिए आप एलोवेरा का फेस पैक भी बना कर लगा सकते हैं। इसलिए आज हम आपको सौंदर्य में निखार लाने के लिए एलोवेरा साबुन बनाने के बारे में बताएगें। इसे आप घर पर बहुत ही आसानी से बना सकते हैं। तो आइए जानते हैं साबुन बनाने की विधि और सामग्री।

1 किलो ऐलोवेरा साबुन बनाने की सामग्री

- ऐलोवेरा का पल्प 110 ग्राम - कास्टिक सोडा 110 मिली - जैतून का तेल 750 मिली - पानी 250 मिली - आवश्यक तेल ऐलोवेरा साबुन बनाने के विधि :-

1. इस साबुन को बनाने के लिए पहले एलोवेरा, ऑलिव ऑयल, पानी, कास्टिक सोडा और साबुन में खुशबू डालने के लिए आवश्यक तेल लें।

2. ध्यान में रखें कि साबुन को बनाने के लिए खुली और हवादार जगह हों। साथ ही साबुन बनाने समय हाथों में दस्ताने जरूर पहन लें।

3. इसके बाद पानी को उबाल कर प्लास्टिक कंटेनर या बालटी में डाल लें और इसमें कास्टिक सोडा मिला कर मिक्स करें व ठंडा होने के लिए रख दें।

4. जब यह मिश्रण ठंडा हो जाए तो चाकू की मदद से ऐलोवेरा को काटें और उसका पल्प निकाल लें।

5. अब इस पल्प को मैश करें और ऑलिव ऑयल को माइक्रावेव में गर्म करें।

6. जब ऑलिव ऑयल ठंडा हो जाए तो इसमें जैतून का तेल मिलाएं और ऐलोवेरा को मिलाएं।

7. आप इसमें अच्छी खुशबू पाने के लिए लैवेंडर, गुलाब आदि मिला सकते हैं।

8. जब यह सारा मिक्स हो जाएं तो बड़े और गहरे सांचे में डालें और ठोस होने के लिए रख दें। 9. जब यह ठोस हो जाए तो इस ऐलोवेरा साबुन को टुकड़ों में काट लें।

बाद में इन टुकड़ों को ठोस हेने के लिए 15-30 दिनों तक रख दें। बाद में इसका इस्तेमाल कर लें।